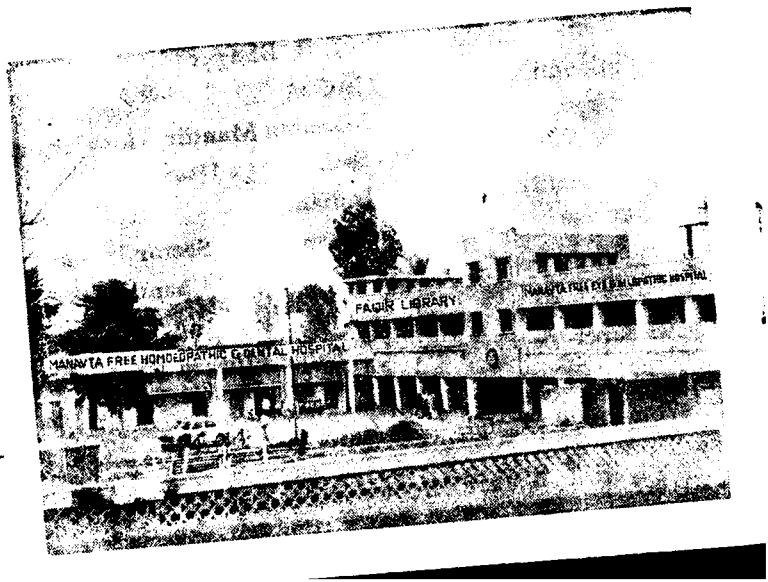

मन्दिर

77

FORM IV

(See Rule 8)

Place of Publication	Manavta Mandir, Hoshiarp
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpur
Publisher's Name	M. R. Bhagat
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Hoshiarpu
Editor's Name	Seth Durga Dass
Nationality	Indian
Address	House No. 2, Sector 19—A Chandigarh.
Name and address of individuals, who owner the news paper or partners, or shareholders, holding more than one percent o7the total capital.	Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I, M.R. Bhagat hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief,

Dated . 9.6.77

Signature of Publishers

Printed and Published by M. R. Bhagat at Sudhakar Printers, Ashok Nagar, Hoshiarpur for the Faqir Library Trust, Hoshiarpu

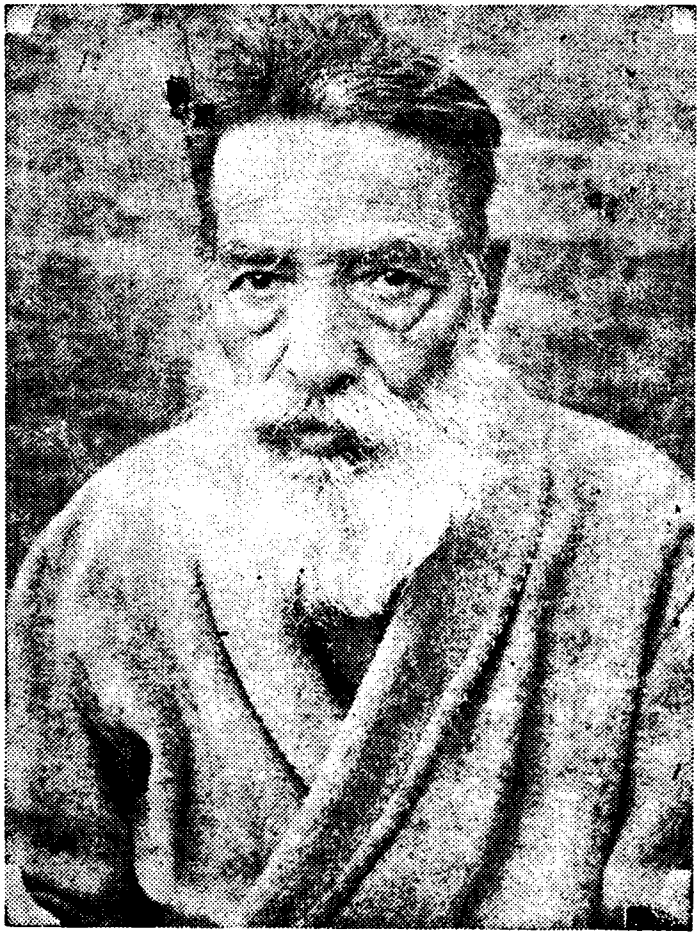

परमसन्त, परमदयाल
श्री पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

मासिक—

मानव मन्दिर

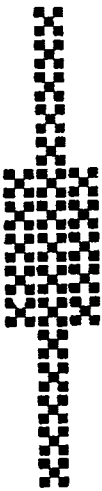

संरक्षक :

परम दयाल पं० फ़कीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ४ | [redacted] संख्या

जुलाई १९७७ संख्या ३

धन

लेखिक :—सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़ ।

राधास्वामी ।

१. धन के बिना इस संसार में किसी का निर्वाह नहीं होता । गरीब हो या धनी, मज़दूर हो या कारखानावाला, व्यापारी हो या दुकानदार, पुरुष हो या स्त्री, बच्चा हो या बूढ़ा, साधु हो या संसारी । हर एक को धन की बहुत आवश्यकता है । धन को प्राप्त करने में प्रातः सायं, दिन रात हर समय व्यस्त रहता है । कोई धन इकट्ठा करने में लगा हुआ है । कोई अपनी जीविका के लिए इसकी आवश्यकता समझता है । इसके बिना किसी का निर्वाह नहीं । इसके बिना यह संसार नर्क है । संसार दुखदाई है । जीवन बेकार है बल्कि एक लाहनत है ।

२. धन का उपयोग कई प्रकार का है । जिनकी जीविका सीमित है, आमदन कम है, वे बेचारे

कठिनता से निर्वाह करते हैं। इनकी दशा दयनीय है। गरीबों के संतान भी ज्यादा होती है। वे विचारे ऐसे बाल बच्चों का पेट भी पूरा नहीं भर सकते। इनकी इच्छाओं को पूर्ण नहीं करते अथवा नष्ट कर देते हैं। आजकल शिक्षा बड़ी महंगी होती जा रही है। एक गरीब के लिये अपने बच्चों को पढ़ाना बड़ा कठिन काम है। गरीब तो यह चाहता है कि बच्चा ज़रा होश सम्भाल ले तो वह कुछ काम करके धन घर लावे ताकि पेट की आग बुझाने का काम सरल हो जाये। धन के बिना गरीब और मज़दूर संसार में आया न आया समान है।

३. कोई कोई सज्जन धन का उपयोग बड़े ठीक ढंग से करते हैं। अपनी कमाई का कुछ भाग गरीबों की सहायता के लिए रखते हैं। कई दान पुण्य करते हैं। कई महापुरुष ऐसे हैं जिन्होंने गरीबों के लिए सदाबर्त और लंगर खोल रखे हैं जहां पर गरीबों को मुफ्त खाना मिलता है। कई सज्जनों ने धर्मशाला और सराय बना दिए हैं जहां पर यात्री आराम कर सकें। कई सज्जनों ने वृद्ध आश्रम खोल रखे हैं जहां पर बूढ़े आदमियों की देख भाल होती है। कई संस्थाओं

ने कोढ़ियों के लिए आश्रम खोल रखे हैं जहां पर उनके रहने, आराम और भोजन का प्रबन्ध है और इलाज भी कराया जाता है। कई महापुरुषों ने हस्पताल खोल रखे हैं जहां पर बीमारों का मुफत इलाज होता है। स्कूल खोले जाते हैं जहां पर मुफ्त शिक्षा दी जाती है।

४. इन महापुरुषों ने संसार को सुन्दर बना रखा है संसार को रहने योग्य बना रखा हैं। गरीबों के आसूं बहने नहीं दिए जाते। इनके चरणों में नमस्कार करता हूं। संसार में केवल ऐसे महापुरुष मानव कहलाने का अधिकार रखते हैं।

आग लगी आसमान को झर झर गिरे अंगार।
गर न होते सन्त जन जल मरता संसार॥
ऐसे महापुरुषों के सहारे यह संसार आबाद है।

५. ज़रा तनिक विचार करो। पुराने ज़माने की बात याद करो जब राजे महाराजे और बाकी सज्जन ७५ साल की आयु के बाद घरबाहर छोड़कर, धन धान्य को लात मारकर, जीवित रहते हुए, अपने हाथों अपने बच्चे को तिलक लगाकर राजपाठ देकर स्वयं सन्यास ले लेते थे। तनिक इनके चरित्र और विचारों

पर ध्यान दो। वे क्यों ऐसा करते हैं। धन उद्देश्य नहीं है। धन जीवन व्यतीत करने का केवल साधन है।

जीवन का क्या उद्देश्य है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

तुलसी या जग आये के, कर लीजे दो काम।
देने को अन्नदान है, लेने को हरि नाम॥

६. दूसरे दर्जे पर वे मानव आते हैं जिनको धन का बहुत लालच है। दिन रात और प्रात: सायं धन इकठ्ठा करने में लगे हुए हैं। वे अपने काम में सिर तोड़ लगे हुए हैं। इनको बात करने का समय नहीं है। दौड़े जा रहे हैं। जीवन की चाल बहत तेज़ है। चलो चल सो चलो चल। धन को छुपाने की खोज में हैं। कभी धरती में गाड़ा जाता हैं, कभी कुएं में गाड़ा जाता है। जो ढंग धन को छुपाने के ये अमल में लाते हैं, इनको देख कर बुद्धि चकित रह जाती है। ऐसे मानव ने जीवित रहने का ठेका ले रखा है। मौत का कभी ध्यान तक नहीं आता। मेरे बाद मेरी संतान, यह एक विचार है जिसके कारण सब प्रकार के औज़ार धन इकठ्ठा करने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं, धोका देही, चोर बाज़ारी, रिशवत और

बेईमानी इनका स्वभाव है और वे इन ढंगों पर गर्व करते है। चौधरी बन बैठे हैं। लीडरी में कदम रखते हैं।

इनको मानव कहना भूल है। इनसे कोई काम इन्सानी मनसूब नहीं किया जा सकता।

७. धन से मित्रता कभी पैदा नहीं हुई। धन के कारण सदा शत्रुता पैदा होती है। किसी समय यह धन ऐसी लाहनत बन जाता है कि भाई भाई का रिश्ता नहीं रहता। स्त्री पति से नाराज़। बेटा बाप का शत्रु बल्कि कत्ल तक नौवत आ जाती है किसी सम्बन्धी को धन दे दो, सम्बन्ध नहीं रहेगा। वह दुशमन हो जायेगा अपने पराये बन जायेंगे। उधार खुशी से दे दो वापिस मांगों वो झगड़ा। इनके लिए संसार में जीवन में धन एक लक्ष्य है।

एक कहावत है सुनाता हूं। कोई आदमी लक्ष्मी का दर्शन करना चाहता था। लक्ष्मी धन की अधिष्टाता है। किसी साधु के पास गया और उससे प्रार्थना की, कि मैं लक्ष्मी के दर्शन करना चाहता हूं। साधू ने कहा कि लक्ष्मी अमुक जंगल में और अमुक पेड़ के नीचे रात के 12 बजे आया करती है। वहां

जाकर इसके दर्शन करलो। वह वहां गया और रात के 12 वजे लक्ष्मी वहां प्रकट हुई। चान्द सा उजाला हो गया। खूब दर्शन किये। क्या देखता है कि लक्ष्मी का मस्तक काला है। इसने पूछा यह क्या बात है। लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि मैं महापुरुषों और महात्माओं के पीछे पीछे रहती हूं। इनके चरणों में अपना मस्तिष्क झुकाकर मत्था टेकती हूं और प्रार्थना करती हूं मुझे अपनी शरन में ले लो। लेकिन वे मुझे ठुकरा देते हैं इसलिए मेरे मस्तिष्क पर काला निशान पड़ गया है। इस आदमी ने पूछा आपके पांव क्यों काले है तो लक्ष्मी ने उत्तर दिया कि संसार के सब लोग पीछे पड़े रहते हैं और अपना मस्तिष्क मेरे चरणों में रखकर प्रार्थना करते रहते हैं इस लिए पांव काले हो गये हैं।

इस आदमी ने सोचा कि दर्शन तो कर लिए लेकिन कुछ लाभ नहीं हुआ इसलिए लक्ष्मी को अपने काबू में करना चाहिए। ज्योंहि उसने ऐसा सोचा लक्ष्मी दृष्टि से ओझल हो गई और आवाज़ आई संसार वाले मेरे पीछे रहते हैं। मैं इनके आगे २ दौड़ती रहती हूं। मेरा पक्का ठिकाना किसी जगह

नहीं है। आई और गई। मैं वहां रहना पसन्द करती हूं जो मुझे अपनी बेटी समझ कर रखे। बेटी पराया धन समझा जाता है या मैं वहां पर रहती हूं जहां पर कंगाल की सेवा होती है, निर्धन की सहायता होती है। तू जा अपना काम कर। मुझे अपने वस करने की कभी न सोचना।

९. पुराने जमाने में हर एक धनी (साहुकार) यह समझा करता था कि जो धन इसके पास है इस पर लोगों का अधिकार है। इस धन पर अकेले साहुकार को कोई अधिकार नहीं है। यह पब्लिक के ट्रस्ट का धन है ऐसा मुझे किसी ने बताया था क्योंकि बिना जुल्म के धन कभी इकठ्ठा नहीं किया जा सकता है। ऐसा एक सन्यासी ने कहा था। मैंने इस पर प्रश्न कर दिया कि एक कर्लक पोस्ट औफिस में नौकर है टिकटें बेचने का इसका कर्तव्य है। अगर इसने अपनी तन्रवाह में से कुछ बचत करके मकान बना लिया और मकान का किराया इसके पास बैंक में इकठ्ठा होता रहा। इसका यह धन कैसे जुल्म से कमाया गया कहा जा सकता है तो सन्यासी महाराज

जी का उत्तर था कि इस कलर्क ने सबसे बड़ा अप्राध किया है अपने बच्चों और अपनी बीबी का पेट काटकर और उनकी और अपनी इच्छाओं को दबाकर धन बचाता रहा। यह कर्लक सब से बड़ा दोषी है। मैं चुप हो रहा। असल में बात ठीक है जिस दृष्टि से देखना चाहो देख लो। कबीर साहिब फरमाते हैं।

मोहे इतना दीजिए, जितना कुटम्भ समा।
न भूखा मैं रहुं, न भूखा साधु जा।

अगर व्यापार इस आधार पर किया जाये और इस उद्देश्य को रखकर किया जाये कि अपना पेट पालना है। अपने बाल बच्चों का पालन पोषण करना है आज भारत स्वर्ग बन जाये। महंगाई एक दम दूर हो जाये। यहां तो एक २ कम्पनी प्राईवेट हो या सरकारी लाखों और करोड़ो रुपयों का लाभ सालाना निकालती है।

सब को राधास्वामी !

सीधा मार्ग

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

२० मार्च १९७७

आदि अनादि अनन्त अमाया-निःकाया महिमा भारी।
देव दनुज नर किन्नर करता, सन्त जनन के हितकारी।
क्या कोई जाने तुम्हारी लीला, अगम अपार अरूप हो तुम।
भेद न पावे ऋषि मुनि कोई, सारे जगत के भूप हो तुम।
सुनत कान बिन लखत नैन बिन, चलत बिना पद निस बासर।
बिन जिभ्या बोले बहु बानी, ग्रहन करत सब कुछ बिन कर।

राधास्वामी, ऐ फकीर! तूने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जायेगा, कह लिया, क्या कुछ बन गया? अपने दिल का जज़्बा था वो निकाल लिया। इस से क्या फायदा हुआ और मैं जो यह

सत्संग का काम करता हूं, क्यों करता हूं ? देखो, आदमी में जब अकल आ जाती है तो किसी की बुद्धि किसी तरफ जाती है, किसी की किसी तरफ और किसी की किसी तरफ जाती है। एक जानवर दूसरे जानवर को खाता है, पत्तों को कीड़े खाते हैं और उन कीड़ों को दूसरे कीड़े खाते हैं। मैं जब होश में आया तो दुनियां को देखा और दुनियां की हालत देखी कि कोई भी यहां सुखी नहीं है। मैं खुद दुखी था, घर में गरीबी थी। सन्तों ने जब देखा कि इस दुनियां में सुख नहीं है तो उन्होंने तलाश (*Research*) के बाद एक नया तरीका निकाला कि इस दुनियां से हमेशा के लिये निकल जाओ। पता नहीं कि सन्त इस संसार के चक्र से निकले या नहीं मगर हम ने ऐसा सुना हुआ है, इसलिये हमने भी इस चक्र से बचने की कोशिश की। मैं अपने आप से यह स्वाल करता हूं कि फकीर ! क्या आदमी इस चक्र से या आवागमन से बच जाता है ? शरीर में रहते हुये मुझे यह अनुभव हुआ है कि दिमाग में एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि न वहां दुख है और न वहां

सुख हैं, न वहां खुदा का ख्याल रहता है और न किसी और चीज़ का। शरीर छोड़ने के बाद क्या होगा ? इस का कोई पता नहीं, इस चक्र से बचने के लिए स्वामी जी महाराज ने बारह मासा के चेत महीने में जो कुछ लिखा है उस के आधार पर मैं कुछ कहूंगा। यह चेत महीना है आप सब को नया साल मुबारक हो।

चेत महीना आया चेत, बान्धा सत गुरु भव में सेत।
जीव चित्ताये जो थे बार-भवसागर से कीने पार।

अब मैं आप को कहने की बजाय अपने आप को कहता हूं कि फकीर ! अगर तू खामखा सन्तों का पक्ष करेगा तो तू मुजरम बनेगा। चेत का अर्थ है चेतवान होना, स्वामी जी महाराज फरमाते हैं कि ए जीव ! तू होश कर, समझ कर, स्वामी जी महाराज ने क्या कहा, ज़रा सोचो, जीव जो भवसागर में डूबे हुये थे उनको सतगुरु ने इस तरफ से उस तरफ कर दिया। जो आदमी इस दुनियां में दुख और अशान्ति महसूस करता है, उसके लिए सन्तों ने सत्संग का पुल बान्ध दिया और उस को सत्संग में सच्ची समझ देते हैं कि भई ! अगर तू इस दुनियां

के दुखों से पार जाना चाहता है तो तू ऐसा कर। अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुम अपने आप को संत सतगुरु वक्त कहते हो, तुम दुनियां को क्या चेतावनी देना चाहते हो ताकि दुखी जीव इस दुनियां से उस दुनियां में चले जायें ? मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर कोई आदमी यह चाहता है कि वो दोबारा इस संसार में जन्म न ले तो उस को क्या करना चाहिये, सुनो ! सन्तों ने बहुत कुछ कहा लेकिन मैं सांइस के अनुसार कहना चाहता हूं ताकि किसी को शक की गुंजायश न रहे। अमरीका रूस और स्विटज़रलैंड आदि के डाक्टरों ने साबत किया है कि मरने वाले के अन्तर से कोई चीज़ निकलती है और परदे पर एक खास किसम का मसाला लगा कर परदे पर उस का फोटो देखा गया है। मरने वाले को मरने से पहले तोला गया और फिर मरने से फौरन बाद वज़न किया गया तो उस का वज़न १० ग्राम, २० ग्राम या २५ ग्राम कम हुआ। इस से यह साबत हुआ कि जो चीज़ शरीर से निकलती है यह उसका वज़न है। लेकिन बाहर निकलने वाली चीज़ तो रूह है या आत्मा है।

कबीर साहिब के कहने के अनुसार सुरत फूल की सुगन्ध से भी झीनी है अर्थात उस का कोई वज़न नहीं है। सुरत का तो कोई वज़न नहीं है तो फिर वज़न क्यों कम हुआ और वो वज़न किस चीज़ का है? सुनो! जब से मुझे यह पता लगा है कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे मन के रूप की समझ आ गई। मैं मन को छोड़ कर आगे जाता हूं, आगे है प्रकाश और शब्द। प्रकाश और शब्द में मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है। उस चीज़ का न रूप है न रंग है और न वज़न है। जब वो शरीर से निकलती है तो चूंकि (*Gross Matter*) या स्थूल चीज़ों से उस की लगन होती है और प्रेम होता है और स्थूल चीज़ों की मन में वासना होती है और मरने बाले का बाल वच्चों से या औरतसे या जायदाद से या गुरु और गुरु की देह से या गुरु के आश्रम से या किसी मन्दिर गुरुद्वारा या तीर्थ स्थान मे लगाव होता है, इस लिये इस प्रेम, वासना,

सम्बन्ध या लगाव की वजा से उस का सूक्षम शरीर भारी होता है और ज़मीन की कशश उस को अपनी तरफ खैंचती है और ऊपर नहीं जाने देती और नीचे अर्थात दक्षिण की ओर खैंचती है। यही शास्त्र कहते हैं कि यमराज का दरवाज़ा दक्षिण की ओर है, इसलिये अगर कोई आदमी आवागमन से बचना चाहता है तो मरने से पहले उस के अन्तर कोई खाहश नहीं होनी चाहिये वरना उसका सूक्षम शरीर भारी होने के कारण ऊपर नहीं जा सकेगा।

सूक्षम शरीर जो निकलता है उसके भारीपन के कई दर्जे होते हैं :--

१. मरने से पहले जिन का लगाव स्थूल पदार्थ से होता है, वो अधिक भारी होते हैं, इसलिये ज़मीन की अकर्षण शक्ति उनको दक्षिण की तरफ अर्थात ज़मीन की तरफ खैंचती है। आप ने बहुधा देखा होगा कि जो आदमी किसी दुर्घटना में मरते है चूंकि मरने से पहले उनको मौत का ख्याल नहीं होता या मरने से पहले उनको दुनियां से वैराग्य नहीं होता वो जल्दी जन्म ले कर दूसरे चोले में आते हैं, उनको पिछली

यादाशत होती है और वह बचपन में ही अपने पिछले जन्म के हालात बता देते हैं।

२. जो चेतवान होके मरते हैं और दुनियां के स्थूल पदार्थों से मोह नहीं रखते, वे जुदा २ लोकों अर्थात विष्णु लोक और शिव लोक आदि में जन्म लेते हैं चूंकि उनका सूक्षम शरीर भारी नहीं होता इसलिये वो पृथ्वी पर वापस नहीं आते, चूंकि उन के अन्तर मालिक से या निर्गुण स्वरुप से प्रेम होता है इस लिये वो अपने विचारों के अनुसार सूक्षम प्रकृति वाले लोकों में जन्म लेते हैं और फिर समय के वाद हो सकता है कि वह इस दुनियां में जन्म लें मगर फिर जब वह जन्म लेते हैं तो किसी खास मिशन को लेकर आते हैं। इस श्रेणी (*Category*) में ऋषि और धार्मिक लीडर आदि शामिल हैं।

३. जो लोग प्रकाश मय होकर अर्थात अन्त समय पर जिन के अन्तर प्रकाश पैदा हो जाता है वह सूरज के रास्ता होते हुए बड़े प्रकाश में चले जाते हैं या ब्रह्म देश में चले जाते हैं मगर फिर जब कभी उस बड़े प्रकाश में कोई कुदरती जज़्वा पैदा होता है तो वह इस संसार में किसी खास मिशन को लेकर किसी

ब्रह्म अवतार के साथ इस सृष्टि में पैदा होते हैं जैसा कि शास्त्र कहते हैं कि जब प्रकाश ने राम या कृष्ण का अवतार लिया तो कोई हनुमान बना, कोई सुग्रीव बना या कोई गोप और गोपियां बने, आवागमन इन तीनों को ही होता है। यह दूसरी बात है कि आवागमन इस भूमंडल में हो या किसी और लोक में हो, मगर होता ज़रूर है। जो आदमी स्थूल प्रकृति (जिसमानियत) सूक्ष्म प्रकृति (ख्यालियत) और कारण प्रकृति (प्रकाश) का इष्ट नहीं रखते और ज़ात, परम तत्व या सतपद का इष्ट रखते हैं वो फिर यहां दोबारा जन्म नहीं लेते वह प्रकाश और शब्द के मंडल में विचरते रहते हैं।

4. इससे आगे एक और दरजा है वो अपनी हस्ती अर्थात अपने 'है' पने को मिटा जाना है। यह तलाश परम सन्तों की है और उस जगह का नाम 'अनामी' है, जहां पहुंच कर सुरत का अपना अस्तित्व खतम हो जाता है।

परम सन्त अनामी धाम से आते हैं और ऐसा सन्त कभी कभी आया करता है। जब यह ज़मीन घूमती हुई सतलोक के बिलमुकाबिल आती है तब

कोई सन्त पैदा होता है और यह कभी कभी ही होता है और ऐसे सन्त यहां आकर समय के अनुसार कोई नया ख्याल देते हैं । और जो अवतार होते हैं वो प्रकाश के मण्डल से आते हैं और यह दुनियां के हालात के मुताबिक जीवन बनाने का ख्याल देते हैं और कई ऐसे भी होते हैं जो इस ज़मीन पर आकर साइंस के द्वारा कोई आविष्कार करते हैं और दुनियां के फायदे के लिये नई नई चीजें पैदा करते हैं ।

मैंने अपने आपको संत सतगुरु वक्त कहा है और मैं हूं भी । मुझे सुरखाब का पर नहीं लग गया । सतगुरू सच्चा ज्ञान देता है और जीवों के लिये सत्संग का पुल बान्धता है और जीवों को हदायत करता है । मैंने साइंस के तरीके से हदायत की, हिन्दु कहते हैं कि सावित्री के दर्शन करो । पार ब्रह्म से आगे जाओ तब तुम आवागमन के चक्र से निकलोगे । सन्तों ने कह दिया कि दसवें द्वार से परे प्रकाश और शब्द या नाम को पकड़ो । सनातन धर्म और सन्तमत में कोई फर्क नहीं है । आप लोग मेरे ेत्र हैं मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर जाना चाहता हूं इसलिये कहता हूं कि अगर मरते समय तुम्हारे सामने

बाबे फकीर का या किसी और का रूप या राम या कृष्ण का रूप आयेगा तो तुम आवागमन से बच नहीं सकते। हजूर राय सालिगराम साहिब जी महाराज ने अपनी प्रेम बाणी में लिखा है कि अन्त समय फिल्म चलती है। जिन्दगी में जो कुछ किया है वो सामने आ जाता है। गुरु भी सामने आ जाता है, शब्द भी सुना जाता है, फिर उसका सूक्ष्म शरीर कुछ देर के लिये ऊपर के लोकों में रहता है, वहां उसको गुरु के दर्शन भी होते रहते हैं और गुरु उस को शब्द भी सुना देता है। फिर जब कोई संत सतगुरु वक्त संसार में आता है तो वो जीव भी चोला ले कर इस दुनियां में उस सतगुरु वक्त के सम्पर्क में आकर बाकी की कमाई पूरी करके अपने निज घर वापस पहुंच जाता है। इसलिये ऐ मेरे पुराने मित्र पुरुषोतम दास, मास्टर मोहन लाल और डाक्टर नागी या और जो पुराने पुराने सत्संगी हैं उनको मैं चेतावनी देता हूं कि किस तरह से तुम अपने अन्तर चलो, इसके इलावा कोई गुरु किसी को फूंक नहीं मार सकता। गुरु का काम है तरीका बताना और ज्ञान देना। मेरी तो आंख खुल गई। मैं कहा करता

हूं कि मैं कही नहीं जाता, मगर लोगों की चिट्ठियां आती हैं कि आप हमारे अन्तर प्रकट हुए और यह किया वो किया, मगर मैं नहीं जाता और न ही मुझे कुछ पता होता है।

यह मेजर बृज लाल हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के चेले हैं। यह सत्संग कराया करते हैं। संयोग से एक दफा मेरे पास आये। यह मेरे विचारों से सहमत थे. मैंने इससे कहा कि आप नाम दान दिया करो। मैं तो आज़ाद ख्याल आदमी हूं। जब इन्होंने नाम दान देना शुरू किया तो ब्यास के सतसंगी इनके खिलाफ हो गये। आज इन्होंने बताया कि ब्यास के सत्संगो जो इन के खिलाफ थे, उन पर कोई मुकदमा बन गया और वह इनके पास आये, इन्होंने कहा कि तुम लोग बरी हो जाओगे। उन्होंने अपील की, फैसला की तारीख पर वह फैसला सुनने के लिये शिमले गये, बरी हो गये। उन्होंने आ कर मेजर बृज लाल को बताया कि उन्होंने इन को शिमला में देखा, लेकिन मेजर साहिब कहते हैं कि वो शिमला नहीं गये। अब उन्होने मेरे ऊपर स्वाल किया कि बाबा जी! यह क्या मुआमला है। अब तुम देखो

कि पहले तो केवल मैं ही कहता था कि मैं नहीं जाता अब तो मेजर साहिब भी मेरे साथी बन गये। जो गुरु प्रापेगेन्डा कर के लोगों को अपने दायरे में फंसाते हैं वो महा पापी हैं और धोके बाज़ हैं उन की संगत से तुम आजाद नहीं हो सकते।

एक पुलीस कैप्टन साहिब ने मुझे एक चिठी लिखी जो कि मुझे १० मार्च को मिली, वो लिखते हैं।

मेरे पूज्य गुरु स्वरुप भगवन।

आप के चरण कमलों में मैं सदा नतमस्तक हूं। कुछ दिन पहले हैदराबाद गया हुआ था तो वहाँ एक दिन प्रात: आप के स्वरुप को देखकर मन गाने लगा। जो गीत अपने आप मेरे अन्तर से निकला उसे मैंने लिख लिया। वैसे तो मैंने अंग्रेजी भाषा में वहुत कवितायें लिखी हैं। जब भी लिखने बैठता हूं, उस मालिक की यादके सिवाय किसी और विषय पर नहीं लिखा जाता, इसदफा पहली बार मैंने हिन्दी भाषा में छोटा सा गीत लिखा है जो केवल पांच मिन्ट में अपने आप बन गया, इस की धुन भी मैंने बनाई है। यह छोटा सा

अपना गुरु भक्ति का गीत आप की सेवा में अर्पण कर रहा हूं।

मुझे क्या मिल गया, ओः तू मिल गया।
सब कष्ट मिट गये, सब दुख दूर हुए मुझे क्या मिल गया...
न सोच ही रही, न कोई भय रहा, सुख शान्ति से भरा
अब मन मेरा भरा।
मैं झूमता उंमग में, सदा तेरी तंरग में ... मुझे क्या ...
सब चक्रों से छूटा, सब बन्धनों से टूटा,
तेरी मौज में रमा. तेरे रूप में समा, मुझे क्या मिल...

आप के पास होता तो यह गीत मैं आप के सत्संग में गाता, आशा है आप स्वस्थ होंगे।

आप के हुकम के इन्तज़ार में

आप का सेवक

sd : . . ..

अब तुम सोचो कि जिस बाबे फकीर को उसने देखा क्या वो मैं था ? नहीं, वो उसका अपना ही यकीन और विश्वास था। इन मज़हबों, पन्थों और गुरुओं ने दुनियां को बेवकूफ बना के बहुत लूटा है मैं इसीलिए अनामी धाम से इस फकीर के चोले में यह कहने के लिए आया हूं कि ऐ इन्सान ! तू चेत,

मैं चेतावनी देता हूं कि ऐ इन्सान ! यह सब तेरे ही मन के विश्वास का खेल है। अब एक और चिट्ठी सुनो जो कि आंध्र प्रदेश से एक आदमी ने लिखी है।

१७ मार्च १९७७

हज़ारहा प्रणाम, अर्ज़ है कि मैं एक सत्संगी जो पिटलम (आन्ध्र प्रदेश) का रहने वाला हूं। एक हफ्ता पहले मेरी बहन को भानमत्ती (भूत आदि) की शिकायत शुरू हुई, वो पुकारा करती है और ज़मीन पर गिर जाती है। मैं परेशान हो कर आप सत गुरु के चरणों में यह हाल कह रहा हूं। मैं बहुत गरीब आदमी हूं इसलिये अपनी बहन को 'आमलों के पास नहीं ले जा सकता आपकी कृपा और आशीर्वाद से उस के ठीक हो जाने की आशा रखता हूं।

मेरे घर में ऐक कमरा है जिसमें आपकी फोटो के सामने मैं रोज़ाना अभ्यास करता हूं। जब कभी मेरी बहन आपकी फोटो के सामने जाती है तो उसकी भानमति की शिकायत दूर हो जाती है और वो कहती है कि महाराज जी मुझे जाने के लिये हुकम दे रहे हैं, इसलिये अब मैं अमावस तक रह कर चली

जाऊंगी। वो आपकी फोटो के सामने खड़ी हो कर हाथ पसारती है, आप परसाद देते हैं और वो खाती है"। यह सब हाल भानमत्ती के दौरान होता है और रोज़ाना होता है। सो यह हाल आप से ब्यान कर रहा हूं। आप जो भी हुक्म देंगे, उस पर अमल करूंगा।

आपके चरणो का दास
Sd हजाम नारायण वलद लिंगम

में सच कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं वो आदमी या उसकी बहन कौन हैं और न ही मैं गया और न ही मुझे उसका कोई पता है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने तालीम बदल जाने का हुक्म दिया था, सोचता हूं कि क्या तालीम बदलूं। जो आदमी इस संसार के चक्कर से निकलना चाहते हैं। उनसे कहना चाहता हूं कि जब तक तुम मन के रूप रंग से नहीं निकलोगे, तुम आवागमन से बच नहीं सकते। मन में बहुत ताकत है अगर तुम यह समझो कि ऋद्धि सिद्धि करने से या अन्तर मे बाबे फकीर के या किसो और गुरु या राम और कृष्ण के दर्शन करने से तुम आवागमन से निकल जाओगे तो यह

सरासर ग़लत है। पुरुषोत्तम दास! तू बरसों का मेरा मित्र है। मैं चाहता हूं कि न तुम और न मैं और न यह लोग दोबारा इस दुनियां में आयें। दुनियां में कोई सुखी नहीं, अगर दुनियां मैं सुख है तो आरज़ी है और वो भी चंद दिन का। इसलिये लोगों के सामने दो रास्ते हैं एक निवृत्ति मार्ग और दूसरा प्रवृत्ति मार्ग, संत निवृत्ति मार्ग की तालीम देते हैं। सूक्ष्म शरीर के बारे में कबीर साहिब की वाणी सनो:-

ऐसा लो तत ऐसा लो, में केही विधि कथौं गंभीरा लो ॥ टेक ॥
बाहर कहौं तो सत गुरु लाजे, भीतर कहौं तो झूठा लो ॥
बाहर भीतर सकल निरंतर, गुरु परतापै दीठा लो ॥

मैंने गुरु प्रताप से क्या किया? गुरु ने हुक्म दिया कि मैं आप लोगों की सेवा करूं, इस से मुझे ज्ञान प्राप्त हुआ।

दृष्टि न मुष्टि अगम अगोचर-पुस्तक लिखा न जाई लो
जिन पहिचाना तिन भल जाना, कहे न कोई पतियाई लो ॥
मीन चले मारग जोवै, परम तत धौ कैसा लो।
पुहुप बास हूं ते कछु झीना, परस तत धौं ऐसा लो ॥

तुम लोगों की दया से मैंने उस तत्व को समझा, केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं

जाता, मेरी जिन्दगी का तख्ता पलट गया। कोई सच्चाई नहीं बताता, सब अपने जाल में फंसाते हैं। दुनियां में मैं पहला आदमी हूं जिसने यह सच्चाई ज़ाहिर की, कहा तो और सन्तों ने भी मगर सैन बैन में जिसको कोई समझ न सका, मगर मैंने सच्चाई का डंडा हाथ में ले लिया। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज अपने सत्संगों में कहा करते थे,कि तुम लोग मेरी बात को नहीं सुनते कोई डंडे मार आवेगा जो तुम को सीधे मार्ग पर लायेगा. वो डंडे मार मैं हूं और संसार को चेतावनी दिये जाता हूं कि अगर तुम आगे जाना चाहते हो, तो अन्तर के रूप रंग छोड़ने पड़ेंगे। हम सब उस परम तत्व की अंश हैं। हम अकाल पुरुष से और अनामी धाम से आये हुऐ हैं और हमारा भी वही रूप है जो फूल की खुशबू से भी झीना है। जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता, तो मैं मन से आगे जाने के लिये मजबूर हुआ। आगे है प्रकाश और शब्द जब मैं प्रकाश और शब्द में जाता हूं, तो वहां उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है

और शब्द को सुनती है। वो अति सूक्षम चीज़ है और वही हम सब हैं। मैं उस चीज़ का अनुभव करता हूं। चूंकि आप उसे जानते नहीं इस लिये आप उसे मानते नहीं। यह चेत महीना है। चेतावनी देता हूं। क्यों ? क्योंकि मैं संत सतगुरु वक्त हूं। यह चेतावनी कोई नई नहीं है। है तो वही मगर मैंने इसे खोल दिया।

चेत महीना आया चेत, बान्धा सतगुरु भव में सेत।

वो सेत यानी पुल क्या है जो सतगुरु ने बान्धा ? वो सत्संग का पुल है :--

जीव चिताय जो थे वार, भवसागर से कीने पार।

कैसे पार हो गये ? चेतावनी दी, क्या चेतावनी दी ? वही चेतावनी दी जो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे दी थी। उन्होंने मुझे फरमाया था :-

यह तो नहीं तेरा देश. देश है बेगाना।
यहां सब बेगाने बसें, कोई न यगाना ॥

क्या किसी को ख्याल आता है कि हम ने मर जाना है ? हम लोग तो दुनियां को दायम और कायम समझते हैं। लोग हमारे सामने मरते हैं। लेकिन हम को मौत याद नहीं।

भवसागर अति गैहर गम्भीर।
सत गुरु पूरे बान्धी धीर॥

भवसागर क्या है ? हमारे शारीरिक, मानसिक और आत्मिक बोधभान भव हैं। हमारे *Feelings of life* का नाम भव है। जिन्दगी भव है और हस्ती भव से पार है। हमारा जीवन भवसागर है और जीवन में दुख सुख आते रहते हैं। भवसागर बहुत गम्भीर है। जब जिन्दगी को छोड़ कर हस्ती में चले जाते हैं तो वहां न दुख है और न सुख है। यहां हम अपने विचारों में फंसे रहते हैं, इन में से सतगुरु निकालता है, कैसे ? सत्संग कराकर और समझ और ज्ञान दे कर, इसीलिये राधास्वामीमत ज़िन्दा गुरु को मानता है। जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है वो तो उन का अपना ही मन है लेकिन उन का भवसागर अच्छा है। भवसागर में अच्छाई और बुराई दोनों ही हैं। भवसागर में सत्-चित-आनन्द है और सत्-चित-आनन्द से परे चौथा पद है। सन्तमत को मानने के लिये मजबूर हूं क्योंकि मैंने इस में सच्चाई पाई है। कोई मुरदा गुरु किसी की सहायता नहीं कर सकता। मैं दरदेदिल से कह रहा हूं कि

कोई गुरु, कोई राम, कोई कृष्ण या कोई देवी देवता किसी के अन्तर नहीं जाता। हमारे दिमाग़ पर जो संस्कार पड़े हुये होते हैं वही रूप धारण करके हमारे सामने आते हैं। मैं न उस औरत के अन्तर गया और न सुपरिन्टेडेंट पोलिस के पास हैदराबाद गया। क्या मेजर बृज लाल उस दिन शिमला गये, जिस दिन दूसरे लोगों ने इन को वहां देखा ? नहीं। तुम भूले हुए हो। तुम दस नम्बर के बदमाश को गुरु मशहूर कर दो जो उस पर विशवास करेंगे, उनके अन्तर उस का रूप प्रकट होने लग जायेगा। ऐसे ऐसे वाक्यात भी अखबारों में आये हैं कि गुरु पर तो कतल का केस बना हुआ है लेकिन बड़े बड़े अफसर उस के चेले हैं और उन के अन्तर उस का रूप प्रकट होता है, वो तो आदमी का अपना ही मन है। लेकिन लोग समझते हैं कि गुरु महाराज आ गये। किसी ने सच्चाई नहीं बताई और दुनियां लुट गई। इसी अज्ञान के कारण इन डेरों, धामों, मठ्ठों, मन्दिरों और गुरद्वारों में अरबहा रुपया इक्कठा हो गया। इस दशा को देख कर मैं अनामी धाम से यह कहने के लिये आया हूं कि ऐ इन्सानी नसल ! तू अपने

आप को जान। इन मज़हबों के कारण इसराईल, अरब और पाकिस्तान में क्या हो रहा है। इस मज़हबी अज्ञान की वजह से पाकिस्तान बना और लाखों जानें तलफ हो गई और कितने जुल्म हुए। इस दशा को देख कर कुदरत ने मेरे दमाग़ को हिलाया, मैं जो कुछ ब्यान कर रहा हूं यह बिलकुल सच्चाई है, मैं किसी के खिलाफ नहीं हूं।

तन मन धन की लई जुगात।
शीश उतारे गेह कर हाथ॥

लोगों ने यह समझा है कि तन मन धन गुरु को दे दो। बाल बच्चे बेशक भूखे मर जायें न किसी ने बात को समझा और न किसी ने समझाया, समझाते भी क्यों ? पैसा आना बन्द हो जाता है। इन रोचक और भयानक बानियों की वजह से दुनियां लुट गई। सुनो। अगर धन देने से यह चीज़ मिल जाती जैसे लोगों को ख्याल दिया गया है तो यह बड़े बड़े अमीर सब पार हो जाते, अगर गुरु की टांगें दबाने से या गुरु की प्रशंसा करने से कोई पार हो जाता तो कोई भी पीछे न रहता, इस का अर्थ यह है कि ऐसे चेतवान हो के अभ्यास करो कि उस समय तुम को

तन, मन और धन भूल जाये। यह है तन, मन और धन देना, जब तुम्हारा ऐसा अभ्यास होगा तब तुम आगे जाओगे वरना नहीं। आज कल क्या हो रहा है :--

गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन नाम हराम है, जा पूछो वेद पुराण॥

वो कहते हैं कि सब कुछ गुरु को दे दो लेकिन मैं कहता हूं कि सोच समझ के दो। अभ्यास के समय तन, मन, धन को भूल जाना ही तन, मन, की जुगात देना है। जब तक तुम तन, मन, धन नहीं भूलोगे तुम नाम को नहीं पकड़ सकते और जब नाम को पड़क लोगे तो फिर तन, मन, धन खुद व खुद ही भूल जाओगे, यह है तन, मन धन देना :--

सुरत बहे थी नो की धार।
ताहे चढ़ाया गगन मंझार॥

यह अभ्यास के लिये कहा गया है, अभ्यास आसान है मगर किन के लिये। जिनका शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य कायम है दूसरों के लिये नहीं। मेरा जीवन मेरे सामने है। सतसंगी मेरे पास आते हैं जब तक किसी का विषय विकार का जीवन है नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती। मैं

नाम नहीं देता, क्योंकि नाम के लिये स्वामी जी महाराज ने शर्त रखी हुई है:—

विषयन से जो होय उदासा।
परमारथ की जा मन आसा॥
धन संतान प्रीत नहीं जा के।
जक्त जदारथ चाह न ता के॥
तन इन्द्री आशक्त न होई।
नींद भूख आलस जिन होई॥
बिरह बान जिन हिरदे लागा।
खोजत फिरे साध गुरु जागा॥

यह नाम की पहली शर्त है। आजकल गुरुओं ने तुम को नाम नहीं दिया, अपने नाम के लिये हजारों चेले बनाये। कबीर साहिब ने भी लिखा है:—

कर नैनों दिदार महल में प्यारा है।
काम, क्रोध मद लोभ बिसारो।
शील सन्तोष क्षमा सत धारो॥
मद मांस मिथ्या तज डारो।
हो ज्ञान घोड़े असवार भरम से न्यारा है॥

अनाधिकारी के लिये नाम नहीं है उसे कुछ फायदा नहीं होगा। आजकल दस दस साल के बच्चों को नाम दिया जा रहा है। यह ग़लत तालीम है।

बच्चों के लिये और तालीम है, नौजवानों के लिये और तालीम है और बूढ़ों के लिये और तालीम है। बच्चों को पहले पढ़ाओ, ब्रह्म बनाओ, वे पहले बढ़ें, जब दुनियां में तरक्की करने के बाद दुनियां से वैराग्य हो जाये तो फिर उनके लिये नाम दान है। मेरा छोटा भाई सुरेन्द्र नाथ सातवीं जमात में पढ़ता था वो बिना बताये ही घर से चला गया और हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास चला गया और कहा कि मुझे नाम दीजिए। उन्होने नाम दिया और फरमाया कि तुमने नाम नहीं जपना। तुम्हारे लिये क्या है ? Life means work & work means life" मैं यह आपको नाम के बारे में बता रहा हूं। वो 'NON-MATRIC' नान-मैट्रिक होते हुए भी, ट्रैफिक मैनेजर बना और राय साहब का पद पाया और आखरी उमर में साधु हो गया।

अपने बाल बच्चों के चाल चलन का ध्यान रखो। बच्चों के जिम्मेदार मां वाप हैं। जिन ख्यालात के जेरे असर बच्चे को पैदा किया है वही ख्यालात उसमें आयेंगे और वैसा ही वो बनेगा। जो कुछ मां बाप ने किया है अब उस का

फल भुगतें। सच्ची बात कहता हूं। इस लिये मैंने तालीम को बदला है। मैंने इस ख्याल से एक लड़का पैदा किया है और आज तक मुझे उस की तरफ से कभी कोई शिकायत का मौका नहीं मिला। अगर पार जाना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द को पकड़ो और अगर दुनियां में सुख चाहते हो तो अपने ख्याल को ठीक रखो। चूंकि मेरे ज़िम्मे डयूटी है इसलिये कहता हूं, मगर कौन सुनेगा मेरी बात को ? कोई नहीं सुनता, १९७१ के आम चनाओं के दिनों में मैं ने एक पैम्फलैट शाया किया था, उसमें मैंने लिखा था कि आजकल हर एक पार्टी और भारत का हर एक आदमी एक दूसरे के खिलाफ ज़हर उगल रहा है। नफरत और द्वेष हर तरफ फैलाई जा रही है। इस का नतीजा अच्छा नहीं होगा और वही हुआ। हड़तालें हुईं, घेराओ हुए और आखर कार ऐमरजैन्सी लगी और अब जो कुछ हुआ है, इस का नतीजा भी आपदेख लेंगे। दुनियां में सुखी रहने के लिये शिव संकल्प है चूंकि यह ख्याल की दुनियां है और मनोमय जगत है इसलिये अपने मन को और ख्याल को ठीक रखो।

पहले बन्द कमरे में बैठाकर एक एक आदमी को नाम दिया जाता था और अब तो गुरु लोग हजारों को बैठा कर एक साथ ही नाम दे देते हैं लेकिन नाम का अधिकारी कोई ही होता है। सब के लिये नाम नहीं। हिन्दुओं में आप देखते हैं कि जब कोई बूढ़ा मर जाता है तो दस दिन तक जहां वो मरा है वहां दीप जलाते हैं और उस की लाश के साथ घड़याल और शंख बजाते हैं। क्यों ? मरने वाले को प्रकाश और शब्द का ख्याल दिया जाता है और यही मैं कहता हूं कि अगर पार जाना चाहते हो तो प्रकाश और शब्द को पकड़ो, मगर तुम पकड़ नहीं सकते क्योंकि विषय विकार का जीवन है।

हिन्दुओं में आदमी की उमर को चार भागों में बांटा गया है। पहले २५ वर्ष ब्रह्मचारी रहो, फिर शादी कर के दो चार बच्चे पैदा करो फिर पचास वर्ष की आयु के बाद वानप्रस्थ में आओ अर्थात घर में बाल बच्चों के साथ रहो मगर विषय विकार का जीवन न हो। औरत भी साथ रहे मगर काम अंग पर पूरा कंट्रोल हो, इस के बाद सन्यास आश्रम में आओ। सन्यासी के लिये हुकम है कि वो

तीन दिन से अधिक एक जगह न ठहरे ताकि उस का किसी चीज़ से लगाव न हो जाये। लेकिन मैं आज कल देखता हूं कि लोग बूढ़े भी हो गये, दोहते और पोते भी हो गये लेकिन फिर भी विषय भोग को नहीं छोड़ते और फिर बाबे फकीर के पास मुक्ति के लिये आते हैं, कौन दे सकता है इन को मुक्ति ?

जहां काम तहां नाम नहीं।
जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊ न मिलें।
इक ठौर इक याम।

अगर सत्संग में आये हो तो सुनो ! आप लोगों को चेतावनी दे रहा हूं। न मैं, न कोई और गुरु फूंक मार सकता है। गुरु ने केवल तुमको रास्ता बताना है और अमल करना तुम्हारा काम है। रेडियेशन (*Radiation*) भी उन पर काम करती है जिन का विश्वास होता है।

गगन जाय धुन शब्द सिनहारी।
देखा रूप जोत अति भारी ॥

यहां भी ज़्योति का ज़िकर है और वहां गायत्री मन्त्र में भी यही है कि अपने अन्तर ज़्योति के दर्शन

करो अर्थात शब्द को पकड़ो। अब अगर मैं अन्तर की बातों का ज़िकर करूं तो तुम लोग अधिकारी नहीं और न तुम लोग समझ सकोगे। शुरू शुरू में नाम केवल अधिकारी को ही दिया जाता था और वो भी एकान्त में, लेकिन अब तो नाम अपने नाम के लिये दिया जाता है। आप लोग दुनियां दार हैं। सुनो! मैं जो कुछ कह रहा हूं दरदेदिल से कह रहा हूं, अगर दुनियां चाहते हो तो अपने ख्याल को ठीक रखो और जो चाहते हो उस की ज़बरदस्त चाह अपने मन में रखो, अपने बच्चों के चाल चलन ठीक करो। आज कल क्या हो रहा है? लड़के और लड़कियां यह कहते हैं कि मेरी शादी फलां जगह हो जाये, मेरे पास इस किसम कि रोज़ाना चिट्ठियां आती हैं। तुम लोग स्कूल मास्टर हो, बच्चों का चाल चलन बनाओ तो तुम सच्चे सत् गुरु का काम करते हो। बच्चों को पता नहीं होता कि उन्होंने क्या करना है। प्रवृति मार्ग में सारा खेल तुम्हारे ही ख्याल का है। मैंने रास्ता बिलकुल साफ कर दिया। बानी के जाल में फंसने की ज़रूरत नहीं, चूंकि मन चंचल है, इसलिये एक रूप बनाओ, मैं नहीं कहता कि मेरा रूप बनाओ जहां तुम्हारा विश्वास है उस का

रूप बनाओ. उसको पूर्ण मानो और सब कुछ देने वाला समझो :—

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

ऐसा करके देखो तुम्हारी जिन्दगी बदल जायेगी। मैंने आज़माया हुआ है। लोगों के काम हो जाते हैं और मुझे पता नहीं होता और मैं हैरान होता हूं। लोगों की चिट्ठियां आती हैं कोई कुछ लिखता है लेकिन मैं कहीं नहीं जाता, इस से मैं इस नतीजा पर आया हूं कि ऐ इन्सान! तुम्हारी ध्यान शक्ति में बहुत ताकत है। जिसका काम नहीं बनता, उसकी ध्यान शक्ति कमज़ोर है। देखो! जिसका ध्यान करते हो वो कुछ नहीं देता, तुम अपनी ध्यान शक्ति से लेते हो, गो यह कहने का दस्तूर नहीं लेकिन मैंने जान बूझ कर इस राज़ को खोल दिया है। गुरु की महिमा को मैं जानता हूं मगर तुम तो गुरु को महिमा और समझते हो। गुरु तो सब के अन्तर रहता है। जिन लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है मैं तो जाता नहीं, इसलिये अगर मैं उन को सच्चाई नहीं बताता तो

वह लोग तो इस ख्याल से मुझे धन देंगे और मेरा मान करेंगे कि बाबा जी हमारे अन्तर आये और हमारे काम कर गये तो अगर मैं उस धन को खाऊंगा तो मेरा क्या हाल होगा ? कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता, मगर किसी गुरु ने सच्चाई नहीं बताई । रामगढ़ वाला जगन्नाथ लिखता है कि बाबा जी ! मैं रात को सोया हुआ था, आप आये, मैंने आपको कुरसी पर बैठाया, चाय बनाई और आप को पिलाई, लेकिन मैं तो गया नहीं और मैं खुद हैरान हूं । मैं इस नतीजा पर आया हूं कि सब इन्सान का अपना ही विश्वास है । देखो ! किसी सन्त की मुखालफत करने से भी तुम्हारा भला होगा :—

साधु संग झगड़ा भला, साकत संग न मीत ।
बकरी के गल गलथना, जा में दूध न मूत ।

रावण ने राम से मुखालफत की लेकिन वो भी तर गया, मुक्त हो गया । मैं अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करता हूं और जो कुछ कहता हूं यह मेरा अनुभव है । शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य रखो, ज़्यादा विषय न कमाओ । औरतें बच्चे पैदा करने

के लिए हैं विषय के लिए नहीं। जिन्होंने ज़्यादा विषय भोगा, उनकी सेहत बिगड़ गई। मैं यह नहीं कहता कि औरतों को जवाब दे दो। मैंने सन १९०५ में नाम लिया, सन १९१६ तक कुछ नहीं बना, रोता ही रहा, क्यों ? क्योंकि मेरी बचपन की शादी थी और १५½ साल की आयु में गृहस्थ में फंस गया इस लिये मेरा ब्रह्मचर्य गिर चुका था। इस तजरबे की बिना पर कहता हूं कि अगर मेरे सत्संग में आते हो तो मेरी बात पर अमल करो वरना आया न करो।

मैं कई दफा बाहर दौरे पर चला जाता हूं। मेरी ग़ैर हाज़री में मानवता मन्दिर के सेक्रेट्री श्री मुन्शी राम भक्त काम किया करेंगे, इसलिये मैं यह नारियल, पगड़ी और पांच रुपये इनको भेंट करता हूं। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर ! सच बता कि तेरे पास क्या सबूत है कि श्री मुन्शी राम सत्संग कराने और नाम दान देने के काबल है। पहली बात यह है कि मैंने इन को कभी कहका मार के हंसते नहीं देखा और न ही कभी ग़मग़ीन देखा और न ही कभी इन की आखों में आंसू देखे। मैंने कभी इनको गुस्सा

में नहीं देखा और इन्हींने कभी स्टाफ़ की शिकायत नहीं की। मन्दिर के हजारों रुपये इनके पास रहते हैं। इन्होंने कभी एक पैसे की भी बेईमानी नहीं की। इन्होंने दस साल तक मन्दिर की निष्काम सेवा की। दूसरी बात मकान इनका अपना है और अपनी रोटी खाते हैं। मन्दिर की कोई भी चीज़ इस्तेमाल नहीं करते, पढ़े लिखे आदमी हैं इसलिये मैं समझता हूं कि यह मुझ से हज़ार दर्जा बेहतर हैं। मुझ में काफी कमजोरियां हैं और मुझमें जोशीलापन है और यह मेरी ग़लती है। यह जो मुझको यश मिला है यह मेरे प्रारब्ध कर्म हैं और गुरु की दया है। मैं अपनी ग़लतियों को जानता हूं। श्री मुन्शी राम मेरी ग़ैर हाज़री में काम करेंगे और नाम दान देंगे। औरतों को नाम देने के लिये योगिनी और कमाल पुर वाली माई हैं।

श्री मुन्शो राम जी ने हज़ूर महाराज जी को नमस्कार करते हुए नीचे लिखे शब्दों में हज़ूर का धन्यवाद किया।

जन्म जन्म की विछुड़ी आई भटक रही थी राह न पाई।
भाग जगा दर तेरे आई-चरण शरण दे अंग लगाई।

ऐ दाता । तेरी प्रभुताई-दया धार कर बात बताई ।
यह पगड़ी है किसे बन्धाई-मेरी कहां यह तेरी बड़ाई ।

फिर उन्होने वो पगड़ी हजूर के कदमों में रखते हुए कहा, ऐ दया के सागर ! तेरी दया, तेरा अहसान तू धन्य है, तेरी संगत धन्य है, तेरे बचन धन्य हैं, मेरी "मैं" तेरे चरणों में और मैं तेरी शरणागत हूं ।

अब तुम सोचो कि मैं ने श्री मुन्शीराम के बारे हंसने या रोने की बात क्यों कही । मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास एक दफा देहली गया, उनके पास और भी दो तीन सत्संगी बैठे थे । हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया कि मैं तुम लोगों की परीक्षा लेता हूं । एक कहानी सुनाऊंगा जो आदमी हंसेगा नहीं वो संत है । उन्होने कहानी शुरू की मैंने मन को बहुत रोका मगर मैं अपनी हंसी को नहीं रोक सका, कहानी खतम करने के बाद फरमाया कि फकीर ! अभी तुम कच्चे हो । इस लिये मैंने अपने तजरबे की बिना पर श्री मुन्शी राम जी को *Nominate* किया है । दूसरी परीक्षा उन्होंने मेरी उस वक्त ली जब मैं बसरे बगदादाद से आया । मैं खाना बनाने बैठा तो उन्होंने आवाज दी कि फकीर !

ठैहरो, मैं खुद आ कर सब्जी बनाऊंगा, रसोई में आये देगची में घी डाल कर आग पर रख दिया और मुझे एक मिन्ट में पचास हुकम दे दिये, मैं घबरा गया और एक भी हुकम को पूरा न कर सका। देगची में घी को आग लग गई। उन्होंने देगची को उतार कर नीचे रख दिया और रसोई से बाहर निकल गये। शाम को मैंने प्रार्थना की, कि हजूर ने आज मेरी परीक्षा लेने को कहा था, लेकिन ली नहीं, फरमाया कि तुम्हारी परीक्षा हो गई और तुम फेल हो गये। प्रातः रसोई में तुम मेरा एक भी हुकम पूरा न कर सके, मैंने अर्ज़ की कि महाराज, मैं घबरा गया था, आपने फरमाया कि फकीर ! न घवराना ही फकीरी है।

रोता वो है या हंसता वो है जो किसी घटना से प्रभावित हो जाता है इसलिये मैंने श्री मुन्शी राम में यह गुण देखकर इन को योग्य समझा और उन की योग्यता का उनको हक मिल गया।

जो आदमी भव सागर से पार जाना चाहते हैं वे अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द को पकड़ें ताकि उन को अन्त समय पर प्रकाश और शब्द आ जाये और वे फिर इस चोले में न आयें, अगर अन्त समय राम

या कृष्ण या गुरु का रूप आ जाये तो अच्छा चोला मिलेगा मगर आवागवन से नहीं बच सकोगे। जो रूप अन्त समय प्रकट होता है उस को अगर तुम इन्सान न मानो बल्कि प्रकाश और शब्द मानो तो चूंकि तुम ने उसको प्रकाश और शब्द माना है, इसलिए हो सकता है कि शायद तुम आवागवन से बच जाओ, मगर मेरे पास इस का कोई सबूत नहीं है। यही बात समझाने के लिये कि जो रूप अन्तर में प्रकट होता है वो आदमी का नहीं है कबीर साहिब ने इन शब्दों में लिखा है :—

गुरु को मानुष जानते, सो नर कहिये अन्ध।
दुखी होय संसार में, आगे यम का फंद॥
गुरु किया है देह को, सत गुरु चीना नांह।
कहें कबीर ता दास को, तीन ताप भरमांह॥

जो आदमी गुरु को या बाबे फकीर को या किसी और गुरु के रूप को इन्सान का रूप समझेगा तो उस आदमी का सूक्षम शरीर भारी होने की वजह से ऊपर नहीं जा सकेगा बल्कि ज़मीन की आकर्षण शक्ति उस को अपनी तरफ खैंचेगी, अगर दुनियां चाहते हो तो अपना ख्याल ठीक रखो। तुम्हारे ख्याल

में बहुत ताकत है। जैसा ख्याल वैसा हाल और जैसी आशा वैसी बासा। जिस किसम का बच्चा चाहते हो उसी तरह के ख्याल से बच्चा पैदा करो। तुम्हारे ही ख्याल की ताकत काम करेगी, घरों में शान्ति रखो गुरु से तो प्रेम करते हो मगर घर में झगड़ा करते हो, तो क्या मिलेगा तुमको ? अपनी आमदन से अधिक खर्च मत करो वरना दुखी हो जाओगे। जहां तक हो सके दूसरों के आधीन होने से बचो, अपने पांव पर खड़े होने को कोशिश करो। चूंकि मन चञ्चल है और ठहरता नहीं है इसलिये एक रूप बनाओ और उस को पूर्ण मानो। एक नाम लो और उसका सहारा लो फिर अगर तुम्हारी दुनियां न बने तो मैं ज़िम्मेदार हूं।

मैं अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करता हूं इसलिये जो अनुभव मुझे ज़िन्दगी में हुआ वो आप लोगों को बता दिया। आप लोग आये हैं मैं शुभ भावना देता हूं कि जिस नीयत से आप लोग आये हैं आपकी मनोकामनायें पूरी हों। जो कुछ किसी को मिलता है वो उसका अपना ही विश्वास है। जो कुछ मैंने गुरु बन के समझा है अगर यह ठीक है तो जिन

गुरुओं ने परदा रखा, सच्चाई ब्यान नहीं की और दुनियां को लूटा है तो कर्म के कानून के अनुसार इन के साथ क्या गुज़री होगी। आप खुद सोचो। मैं अपनी बावत जानता हूं कि मैं नहीं जाता। मैं तो अपनी जान बचाना चाहता हूं, मैंने क्या लेना इस गुरुवाई से ? मन के चक्र ने ऋषियों, मुनियों और भक्तों को भी मार डाला।

राधास्वामी !

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक १३ अप्रैल १९७७

प्रातः काल

राधास्वामी। मैं सोचता हूं कि फकीर! तुम यह काम क्यों करते हो? जब राम को दुनियां से वैराग्य हो गया और उदासी आ गई तो महाराजा दशरथ ने उनको गुरु वसिष्ट के पास भेजा। राम चन्द्र जी ने गुरु वसिष्ट जी से कहा कि मैं दुखी हूं। वसिष्ट जी ने कहा कि राम! तुम ब्रह्म के अवतार हो और किसी विशेष काम के लिए संसार में आये हो। क्या मिशन बताया? दैव दैव आलसी पुकारा करते हैं। इस एक विचार को लेकर रामचन्द्र जी ने राक्षसों को मारा और दुनियां में क्या कुछ नहीं किया। ऐसे ही मैं भी संसार से दुखी होकर २४ घण्टे लगातार रोने के

बाद अपने एक दृश्य द्वारा हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरण कमलों में गया था। उन्होंने मुझे फरमाया :--

1. तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा।
   दुखी जीव को अंग लगाके लेजा गुरु के देसा॥
   तीन ताप सें जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी।
   तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी॥
2. तेरा रूप है अद्भुत अचरज तेरी उत्तम देही।
   जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही॥
3. ले परशाद यह सत्संगत का होजा भव निधि तारन।

मेरे जिम्मे तीन कर्तव्य हैं। इनको पूरा करने के लिए मैं घसीटा जा रहा हूं। अपने आप से पूछता हूं कि तू संसार को क्या कहना चाहता है? सुनो! मैं बचपन से ही राम को मिलने निकला था। कभी कभी मैं प्रेम में आकर गाया करता था।

वतन दुराडा देश दुराडा पिआ मैं लम्वड़े राही।
साईं मैंनूं तोड़ पहुंचाई॥

अब मैं अपने आप से पूछता हूं कि क्या तू तोड़ पहुंच गया? तोड़ क्या पहुंचना था। जब मैं तोड़ पहुंचता हूं तो मैं ही नहीं रहती। फिर पहुंचेगा कौन?

यह मेरा अनुभव है। मैं बैसाखी के इन चार सत्संगों में अपना अनुभव कहना चाहता हूं। पहली वात तो यह है कि हम नाम लेते हैं और यह आशा करते हैं कि गुरु हमको सतलोक ले जायेगा और हमारी मुक्ति हो जायेगी। इसलिए लोग गुरुओं की सेवा करते हैं, रुपये देते हैं और गुरुओं के पांव धो कर पीते है और गुरुओं के गुण गाते हैं। मैंने बहुत कुछ किया। अब मैं अपने आपसे पूछता हूं कि फकीर ! क्या तेरी मुक्ति हो गई ? क्या राम राम जपने से या राधास्वामी २ जपने से या गुरु की सेवा करने से आदमी की मुक्ति हो सकती है ? नहीं। क्यों ? विज्ञान ने सिद्ध किया है कि मरने वाले के अन्तर से कोई चीज़ निकलती है। परदा (*Screen*) पर कोई विशेष मसाला लगाकर उन्होंने सूक्षम शरीर का फोटो भी देखा। मरने से पहले आदमी का वज़न किया और मरने के तुरन्त बाद फिर तोला तो कोई दस ग्राम, कोई बीस ग्राम कोई पचीस ग्राम कम हुआ। क्यों ? मेरे अनुभव में यह बात आई है कि जो चीज़ हमारे शरीर में रहती हुई सबकी साक्षी है। प्रकाश को देखती है और शब्द को

सुनती है वह एक अलग चीज़ है। जब कभी मैं अपने आपको अलग करके देखता हूं तो उसका वज़न नहीं है। फिर उसका वज़न क्यों आता है ? स्थूल चीज़ों की वासनाओं के कारण उसका वज़न होता है। जब तक किसी आदमी का राम के रूप से, कृष्ण के रूप से, गुरु के रूप से किसी तीर्थ से या किसी भी स्थूल चीज़ से प्रेम है या लगाव है तो उस प्रेम या लगाव के कारण उसका सूक्षम शरीर भारी होगा और भारी होने के कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति उसको ऊपर नहीं जाने देगी बल्कि दक्षिण की ओर लायेगी। इसी कारण धर्मराज और यमराज का डेरा दक्षिण की ओर माना गया है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने भवसागर से पार करने का कर्तव्य लगाया है। मैं किसी को फूंक तो मार नहीं सकता। सच्चा ज्ञान देता हूं। जो आदमी इस पर अमल करेगा वह पार होगा। अगर वासनायें होंगी तो सूक्षम शरीर भारी होगा। यह तो है विज्ञान। हज़ूर महाराज राय सालिग राम साहिब जी महाराज जिन्होने यह पंथ चलाया है। उन्होंने अपनी प्रेम बाणी में लिखा है कि अन्त समय जीव के सामने फिल्म चलती है, गुरु भी आ जाता है और शब्द भी

सुना देता है फिर उसको कुछ समय ऊपर के लोकों में रहना पड़ता है। फिर जब कोई सन्त सत्गुरु इस संसार में आता है तो वह जीव भी चोला धारण करके इस संसार मैं आता है और उस सन्त तत्गुरु के सम्पर्क में आकर बाकी की कमाई पूरी करके अपने निजघर में पहुंच जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि जो आदमी किसी की देह से प्रेम करता हुआ मरेगा उसको भी दूसरा चोला लेना पड़ेगा। यह दूसरी बात है कि उसको चोला अच्छा मिले और वह नेक बने। हज़ूर बाबा साबन सिंह जी फरमाया करते थे कि जिन को हरिद्वार से प्रेम है वे हरिद्वार की मच्छलियां बनेंगे। अब जिनको होशियारपुर से या व्यास से प्रेम है वे होशियारपुर या व्यास की मछलियां बनेंगे। और सुनो! सनातनधर्म कहता है कि पहले 25 साल ब्रह्मचारी रहो फिर गृहस्थ आश्रम, फिर बानप्रस्थ में आओ। स्त्री साथ रहे मगर मियां बीबी बनके न रहो, फिर सन्यास ले लो। सन्यासी के लिए आज्ञा है कि वह तीन दिन से ज़्यादा एक जगह न रहे ताकि किसी वस्तु के साथ उसका मोह न हो जाये। जड़ भरत ने हिरण का बच्चा पाला था। वह बच्चा बड़ा

हो कर भाग गया। क्योंकि उसके साथ प्रेम था। इसलिये मरने के वाद जड़ भरत हिरण के चोले में गया। मैं अपना अनुभव क्यों कहना चाहता हूं? गुरु आज्ञा वश। मेरे ग्रह ही ऐसे हैं। मैं आया ही इस काम के लिए हूं और यह काम करने के लिए दिवश हूं। इसलिए जो आदमी आवागवन से बचना चाहते हैं उनसे कहना चाहता हूं कि जो गुरु यह कहते हैं कि नाम ले लो, तुम सतलोक पहुंच जाओगे, यह ग़लत है। जब तक किसी आदमी का मरते समय किसी भी स्थूल चीज़ से मोह है और लगाव है वह पार नहीं जा सकता। ये महापुरुष आये हुए हैं। मैंने इनको यहां की रौनक वढ़ाने के लिए नहीं बुलाया। इनको यहां इस लिए बुलाया है कि जो कुछ मैं अपना अनुभव वर्णन करता हूं अगर यह ग़लत है तो ये मुझे बतायें ताकि मैं अपना सुधार करूं और दूसरों को भी ग़लत शिक्षा न दूं। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं लेकिन पवित्र विभूति राय सालिगराम साहिब जी महाराज और हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज और सत कबीर की बाणी अनुसार मैं यह कह सकता हूं कि मेरा अनुभव ठीक है। मरते समय कई लोग कहते हैं कि हमको

लेने के लिए बाबा फकीर आये हैं, पालकी या घोड़ा या हवाई जहाज़ लाये हैं मगर मुझे कोई पता नहीं होता और न ही मैं जाता हूं। इसलिए तो मैं कहता हूं कि मैं अवतार लेकर आया हूं। इन गुरुओं, धर्मों और पंथो ने हमको अज्ञान में रखकर लूटा है। इस लिए मैं कह रहा हूं कि अगर मैं ग़लत हूं तो ये महात्मा मेरा खण्डन करें। मरने से पहले अगर किसी के मस्तिष्क में गुरु, बाप, बेटा धनधान्य अर्थात कोई भो स्थूल चीज़ है तो चाहे उसने लाख अभ्यास किया हुआ है ज़मीन की कशश उसको ऊपर नहीं जाने देगी।

हम भोले भाले जीव हैं। गीता में कृष्ण ने कहा है कि जो कुछ है वह मैं ही हूं और सव कुछ मेरे सपुर्द कर दो। राधास्वामी दयाल ने कहा है।

यह करनी मैं आप कराऊं पहुंचाऊं धुर दरवारा
तुम निश्चिन्त रह करो प्यारा।

जो आदमी इस बाणी को पढ़ेगा वह यही समझे गा कि गुरु स्वयं ही करनी करा देंगे। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज मे लिखा है, 'आजा शरन बचा लूंगा' कबीर सासिब ने लिखा है कि 'मैं ही सव कुछ

हूं' । हज़रत ईसा मासीह ने कहा है कि "मैं खुदा का बेटा हूं मेरी शरन में आओ" । यह सब अहंभाव है । मगर किसी समय ऐसा करना भी पड़ता है ! क्यों ? क्योंकि जीव नादान हैं । उनको समझ नहीं । अगर इस विचार से ऐसी बात कही जाये कि जीव का भला हो तो वह धन्य हैं । लेकिन अगर स्वार्थ के विचार से कहा जाता है तो यह महापाप है । तो हम किधर जायें ? सब धर्म और पंथ हमको अपनी ओर खींचते हैं इसलिए मैं आप लोगों से कहना चाहता हूं कि ऐ मानव ! तू किसी के पीछे मत जा सच्चा बनके अपने अन्तर प्रार्थना कर । वह मालिक घट-घट में है । जहां तुम्हारे अन्तर सच्चाई आई प्रकृति स्वयं प्रवन्ध करेगी । क्या मैं गुरु को ढूड़ने गया था ? अगर मुझे पहले यह पता होता कि राधास्वामी मत ने सब का खण्डन किया है तो मैं कभी भी राधास्वामी मत में न जाता । कौन हिन्दु यह सुन सकता है कि राम और कृष्ण काल के अवतार हैं । मैं रोया करता था कि मालिक ! मैं तो तुमको मिलने निकला था यहां कहां फंस गया । लेकिन प्रकृति मुझे वहां ले गई जहां मेरी कुरीद समाप्त हुई । इसलिए

सच्चे दिल से प्रार्थना किया करो। मांगो वह मालिक देगा। किसी धर्म के पीछे जाने की आवश्यकता नहीं। मैंने पन्थों धर्मों को देखा इन्होंने संसार को अपने पीछे लगाया। मेरी आंख खुल गई। मुझे प्रतिदिन पत्र आते हैं कि आपका रूप प्रकट हुआ, यह किया और वह किया, मगर मुझे कोई पता नहीं होता सब तुम्हारे ही मन का खेल है इसलिए सच्चे बनो और अपनी नीयत को साफ रखो। मैं किसी को धोके में रखना नहीं चाहता। तुम लोग मेरे पीछे या दूसरे गुरुओं के पीछे दौड़ते हो तो क्यों? गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। अनुभव और विवेक का। उसको पकड़ो तब कल्याण होगा।

मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। इस लिए मैं सारे संसार को संदेश दे रहा हूं कि जो कुछ तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है वह जिस प्रकार के संस्कार *Suggestions & Impressions* आदमी के मस्तिष्क पर पड़े हुये होते हैं वही रूप की शकल में तुम्हारे सामने आते हैं। न बाबा फकीर बाहर से तुम्हारे अन्तर आता है और न कृष्ण। इसी एक अज्ञान और परदे

के कारण हम मानव जाति नाना प्रकार के धर्मों साम्प्रदायों में बट गये, असल में हम सब एक हैं मैं अपना कर्तव्य सच्चाई से वर्णन किये जा रहा हूं। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। सम्भव है दूसरे महात्मा जाते हों मगर मैं नहीं जाता। क्योंकि यह महात्मा मेरे सामने मानते हैं कि हम भी नहीं जाते, इसलिए मुझे उत्साह है कि कोई भी किसी के अन्तर नहीं जाता। मगर यह महात्मा लोग मेरी तरह पब्लिक को नहीं कहते कि हम नहीं जाते। अगर ये महात्मा लोग दूसरों के अन्तर जाते हैं और उनके काम करते हैं तो ये धन्य हैं और अगर नहीं जाते और परदा रखकर लोगों से धन मान प्रतिष्ठा लेते हैं तो ये पापी हैं। इन महात्माओं को मैं इसलिए बुलाता हूं कि ये सब लोगों को नाम देते हैं और चेले बनाते हैं लेकिन मैं किसी को न चेला बनाता और न ही किसी को नाम देता हूं। मैं केवल सत्संग कराता हूं ताकि जीवों को जीने का भेद मिल जाये। मैंने गुरु आज्ञावस शिक्षा को बदला है कि सच्चे बनो और अपने अन्तर में पुकार करो वह मालिक हर जगह है। सच्ची पुकार को वह सुनता है और

वह अवश्य पूरी होगी। वह मालिक तुम्हारे अन्तर है। उसका कोई रूप नहीं। जिस रूप में तुम उसको मानोंगे वह उसी रूप में तुम्हारी मनोकामनायें पूरी करेगा। लोग सच्चे दिल से मेरे रूप को याद करते हैं, मेरा रूप प्रकट होकर उनके काम कर जाता है लेकिन मैं तो होता नहीं, तो सिद्ध हुआ कि सब कुछ तुम्हारे अन्तर है और तुम्हारे विश्वास में है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द में लिखा है।

ढूंड मुझको अपने मन में मैं तो तेरे पास हूं।
मैं न काशी हूं न मथुरा मैं न गिरी कैलाश हूं।
तू हुआ मेरा तो मैं भी देख तेरा बन गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही तेरी सच्ची कास हूं।
तेरे भीतर मेरी बैठक आंख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत मैं नहीं आकाश हूं।

मैं किसी को धोके में रखकर अपना उल्लू सीधा करना नहीं चाहता। यह बिलकुल सच्ची बात है। तुम ध्यान करो, चाहे किसी का भी करो मैं यह नहीं कहता कि मेरा करो। राम का ध्यान करो, चाहे कृष्ण का ध्यान करो, देवी का करो, देवता का करो जिसका चाहे करो मगर एक का करो। जब

ध्यान बन जायेगा तो तुम्हारा मनोबल *(will power)* बढ़ जायेगा और उससे तुम्हारे संसार के काम होते रहेंगे। बाकी रह गई मुक्ति। यह सब के भाग्य में तो है मगर समय आने पर।

"नानक कोटन में कोऊं नारायण जिन चेत।

जिस रूप का ध्यान करो उसको पूर्ण मानो और सब कुछ देने वाला मानो। तुम्हारे ही प्रेम और विश्वास का फल तुमको मिलेगा। वह आदमी कहता है कि बाबा जी! मैं जब बीमार होता हूं तो डाक्टर के पास नहीं जाता। आपको याद करता हूं, आप प्रकट होते हैं, दबाई बता जाते हैं। मैं वही दवाई बजार से ला कर खा लेता हूं और स्वस्थ हो जाता हूं। लेकिन मैं तो जाता नहीं। कौन जाता है? सब जीव का अपना ही विश्वास है। मैं बीमार होता हूं तो डाक्टरों के पास जाता हूं। अगर मैं उस आदमी के अन्तर जाकर उसको दबाई बता सकता हूं और उससे वह स्वस्थ हो जाता है तो फिर मैं अपने लिए भी दबाई खरीद कर स्वस्थ हो सकता हूं और मुझे डाक्टरों के पीछे फिरने की क्या आवश्यकता है। सोचो। यह

सब आदमी का विश्वास और श्रद्धा काम करती है। संसार भ्रम में आकर गुरुओं के आगे नाक रगड़ता है और लुटा जा रहा है। मैं संसार को इस लूट से बचाने के लिए आया हूं। सुना करते थे कि अमुक साधु जो अमृतसर में या लाहौर रहता है उसको हरिद्वार और दिल्ली में देखा गया यद्यपि वह उस दिन अमृतसर या लाहौर में अपने आश्रम में मौजूद था। अब मेरा रूप जगह जगह लोगों के अन्तर प्रकट होता है या साक्षात रूप में लोग मुझे देखते हैं और बातें करते हैं लेकिन मैं तो नहीं जाता। तो सिद्ध हुआ कि यह सब आदमी का अपना ही विश्वास है और मन का खेल है मगर किसी ने यह सच्चाई बताई नहीं और संसार को अज्ञान में रखकर मान प्रतिष्ठा और धन लिया। चार दिन का जीवन है मैं अपने आपको साफ रखके जाना चाहता हूं। जिसकी इच्छा करे मेरे पास आये जिसकी इच्छा न करे न आये, मेरी कोई किताब पढ़े या न पढ़े, जिसकी इच्छा हो चार पैसे मन्दिर में दे जिसकी इच्छा न हो न दे। मैंने क्या लेना है। मंदिर चले या न चले। मुझे इससे कोई मतलब नहीं मगर मैं अपनी आत्मा को

गन्दा रखके नहीं जाना चाहता। मैंने बड़े २ सन्तों और महात्माओं की दशा देखी। इनमें से कई बुरी मौत मरे और भारी कष्ट उठाया। मैं सोचता हूं कि एक आदमी भक्ति करता है उसको भी कष्ट हुआ इस वास्ते राम २ बेशक थोड़ा जपो मगर अपने कर्म को ठीक रखो और नीयत को साफ रखो और किसी से धोका फरेब मत करो। हजूर दाता दयाल जी महाराज के शब्द बहुत ऊंचे थे मगर कर्म अनुसार जब अन्तिम आयु में उनको राहु आ गया वह स्वयं ही धाम छोड़ कर चले गये। इस लिए मैं इन महात्माओं से कहूंगा कि सच्चाई वर्णन करो। मगर इन को भी मैं दोषी नहीं ठहराता क्योंकि तुम लोग भी सच्चाई सुनने के लिए तैयार नहीं हो। देखो! मेरा मंदिर बना देने से या मुझे रुपये देने से तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी। अगर रुपया देने से किसी की मुक्ति हो सकती होती तो ये पैसे वाले लोग सब मुक्त हो जाते और वेचारे गरीब इससे वंचित रहते। यह सांसारिक व्यपार है। रुपया दोगे रुपया मिलेगा। किसी दुखिये की सहायता करोगे तो तुम्हारी भी सहायता होगी। मान दोगे मान मिलेगा और गाली दोगे तो गाली

मिलेगी। मुक्ति तब मिलेगी जब सत्संग में जाकर गुरु का सत्संग सुनोगे, समझोगे ओर उसपर अमल करोगे। यह है गुरु की भक्ति।

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गंवाई।

मुझे खुशी है कि मैंने जीवन भर किसी से धोका फरेब नहीं किया और हर एक पहलू से मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया है। मैंने किसीकी नकल नहीं की। हो सकता है कि मैंने जो समझा और अनुभव किया वह सारे का सारा ग़लत हो। इसलिए अगर मैं ग़लत हूं तो मेरा बड़ी खुशी से खण्डन करो। मुझे कोई दुख नहीं। अगर दूसरों को अपना अनुभव कहने का अधिकार है तो मुझे भी अधिकार है दूसरों ने तो दावा किया होगा मगर मुझे कोई दावा नहीं। जो कुछ मैं कहता हूं। क्योंकि बाणी इसकी पुष्टि करती है इसलिए मैं समझता हूं कि यह ठीक है। अब जो कुछ प्रोफैसर वसिष्ट जी ने कहा है यह ठीक है मगर

मैंने जब महात्माओं की दशा देखी तो मैं डर गया। पहले आत्मा फिर परमात्मा। मुझे अपनी जान प्यारी है। अगर मेरे पास कुछ है तो मुझे पता नहीं एक आदमी मेरे पास आकर अगर यह कहता है कि बाबा जी! आपका रूप प्रकट हुआ और यह किया और वह किया, मुझे रुपये देता है और मेरी सेवा करता है, अगर मैं उसकी दी हुई चीज़ों को खा जाऊंगा तो क्या मैं दोषी नहीं? क्योंकि मैं तो गया नहीं और न ही कुछ किया है हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का उपकार है। उन्होंने फरमाया था कि फकीर तू जगत गुरु है। जगत गुरु कौन है? जिसको रचना का ज्ञान है कि यह रचना कैसे बनती है और कैसे बिगड़ती है। वह जगत गुरु है। एक आदमी सारे संसार का गुरु नहीं हो सकता। मैं प्रोफैसर विसिष्ट जी के साथ सहमत हूं। लेकिन मैं हूं पी-एच-डी और एम-ए क्लास को पढ़ाता हूं। मेरी शिक्षा से छोटी श्रेणी वालों की हानि भी होती है मगर मैं उनकी हानि को देखूं या अपने आप को देखूं। सन्तों की दशा को देखकर मैं डर गया। इसलिये

मैं सच्चाई वर्णन करता हूं। मैंने क्या लेना गुरुवाई से ? अगर मैं ग़लत हूं तो मैं दोषी नहीं क्योंकि मेरी नीयत साफ है और जीवन में मैंने अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी को धोका नहीं दिया। मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं उनको शुभ भावना देता हूं और प्रसाद देता हूं लेकिन एक भृगुसंहिता वाले पण्डित ने मुझे कहा था कि आप प्रसाद देना और आशीर्वाद देना बन्द कर दीजिए वरना आप को दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। सच है या झूठ है इस का मुझे पता नहीं मगर मैं यह सोचता हूं कि आशीर्वाद देने से और प्रसाद देने से अगर किसी का भला होता है तो मेरा इस में क्या हर्ज है मैं तो कुछ करता नहीं दूसरे का विश्वास काम करता है।

आप लोगों ने इन महात्माओं के वचन सुने। मैं नहीं कहता कि आप मेरी बात को मानो क्योंकि मैं किसी का ठेकेदार नहीं हूं। मैं तो अपना कर्तव्य जो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे लगाया हुआ है उसको पूरा कर जाना चाहता हूं। और मैं आवाज़ देता हूं कि एक जगह विश्वास रखो

वो शक्ति हर जगह मौजूद है और अपने अन्तर सच्चे बनकर प्रार्थना करो वो जरूर सुनता है। यह जरूरी नहीं कि तुम किसी गुरू के ही पास जाओ और उस पर विश्वास करो। तुम अपने अन्तर अपनी आत्मा पर विश्वास करो। आनन्द राव! मैं तुम को शपथ देता हूं कि अगर मैं ग़लती पर हूं मेरा खण्डन करो। मुझे यह कोई दावा नहीं है कि जो कुछ मैं कहता हूं यही ठोक है। हजूर दाता दयाल जी महाराज की आज्ञा थी यह काम करने की; इसलिए घसीटा जा रहा हूं। मगर इतना अवश्य कहूंगा कि जो कुछ मैं कहता हूं इस के बिना धार्मिक एकता नहीं हो सकती। आज कल गुरुओं के आपस में झगड़े हो रहे हैं और मुकद्दमें बाजीयां हो रही हैं। यह कहां का गुरुवाद है? इन्होंने गुरुमत को समझा नहीं।

गुरु मध्य आदि अनन्त ,अद्भुत अमल, अगम अगोचरम्।
विभू विरज पार अपार निर्गुण सगुण सत्य विश्वेश्वरम ॥
जेहि मति लखे नहिं गति लखे, यह शुद्ध तत्व विचार है।
जो चरण कमल को ओट आया, भव से वेड़ा पार है॥

गुरु शब्द स्वरुप है और उसके चरण प्रकाश हैं। सनातन धर्म इसको शब्द ब्रह्म और पार ब्रह्म कहता

है। मैं कुछ नहीं करता तुम्हारा विश्वास करता है। चार दिन के जीवन के लिए मैं क्यों हेराफेरी करूं। मेरा कर्म मेरे साथ जायेगा। मेरी नीयत साफ है। दोष नीयत पर होता है। मेरा वह भी कभी समय था जब मैं प्रेम और विरह में शब्द गाया करता था और रोया करता था लेकिन जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे मन के रूप की समझ आ गई और मैं मन को छोड़कर ऊपर चला गया और मेरा दोपना अर्थात द्वन्द समाप्त हो गया। ऐसा होना ही था, ये दर्जे हैं अब मेरा वह समय बीत गया। मुझपर गुरु की दया क्या हुई? सुनो! मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया। मैंने तम्बूरा बजाया। उनके दरवार में गाया और नाचा। उन्होंने मुझे गुरु पदवी दी और फरमाया कि तुमको सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और अब मुझे आप लोगों के दर्शन हो गये। मंज़ल का पता मुझे आप लोगों से केवल इस एक बात से लगा कि आपने बताया कि मेरा रूप आप लोगों के अन्तर प्रकट हो कर आपके काम कर जाता

है। क्योंकि मैं नहीं होता इसलिए मैं मन के रूप को समझ गया। अब मन से परे उस मालिक की तलाश में जाता हूं। वहां उस चीज़ को तलाश करता हूं जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता। घर का मुझे पता लग गया। हमारा घर वह है जहां न रूप है, न रंग है, न प्रकाश है और न शब्द है। वहां अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता। तुम्हारी बदौलत मुझे यह समझ आई। यह है मुझपर गुरु की दया। बाकी मेरा अपना ही जज़्बा था। उसका मैंने आनन्द लिया।

सब को राधास्वामी !

निज मन धोखा

लेखक :—सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़ ।

निज मन को धोखा देना बिल्कुल असम्भव है। निज मन तो मनुष्य की सारी करनी का गवाह होता है। निज मन जाग्रत अवस्था में सदा साथ रहता और चैतन्य रहता है। इस कारण मनुष्य के लिए अपनी करनी को अपने निज मन से छुपाना बिल्कुल असम्भव है। कई मनुष्य अपने मन की आवाज की परवाह ही नहीं करते। लेकिन इन्सान निज मन को क्या करेगा, क्योंकि निज मन समय समय पर फटकार देने से बाज़ नहीं आता है। इस फटकार से बचना अति कठिन काम है। जो निज मन की आवाज़ को ध्यान से सुनते हैं और इस पर अमल करते हैं वे सच्चे महापुरुष हैं। मैं उनके चरनों में सिर झुका कर प्रणाम करता हूं।

तन मन दिया तो क्या हुआ निज मन दिया न जाये।
कहे कबीर ता दास सों कैसे मन पतियाये ॥

मन की आवाज़ अगर धीरे २ चुप कराई जाये तो चुप हो जाया करती है। लेकिन निज मन अपने रूप को सम्भालता रहता है और सीधा और ठीक रास्ता बताता रहता है . क्या कसाई और बूचड़ के दिल में दया के लिये जगह नहीं है ? दया भाव का स्थान उनके दिल में है। वे दयावान भी होते हैं। दया करते हैं, तरस खाते हैं। उनकी अपनी संतान से प्यार करते देखो। ज़मीर दो प्रकार की है। एक बुरे कार्यों को प्रेरना देतीं है दूसरी बुरे कार्यों से रोकती है। अच्छे २ कार्य करवाने के लिए उकसाती है। बुरे कार्य करवाने वाली ज़मीर का नाम शैतान है। अच्छे काम करवाने वाली ज़मीर का नाम रहमान है। जब गुरु की संगत मिल जाती है तो मन शैतान और रहमान को छोड़ जाता है निज मन में स्थान बना लेता है फिर क्या होता है।

पहले यह मन काग था करता जीवन घात।
अब तो मन ऐसा भया मोती चुन २ खात॥

दुनियां को धोका देना सरल काम है लेकिन इंसान अपने मन को धोका नहीं दे सकता। ग्राहक को सौदा कम वज़न में देना, दाम ज़्यादा लेना,

मिलावट करना, चोर बाज़ारी करना सेलज़टैक्स और इन्कम टैक्स की चोरी करना और कई प्रकार की ठगी दुकानदारी के व्यापार में करना। लेकिन दुकान खोलने से पहले मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे अवश्य जाना और अपने माथे पर लम्बा चौड़ा टिक्का लगाना जो सारा दिन कायम रहे, इनके लिए टिक्का ईमानदारी की मोहर बन गया है ताकि ग्राहक और अन्य लोग टिक्के के कारण इसको नेक मानव और ईश्वर भक्त समझकर इसपर विश्वास करें। यह टिक्का लगाना उसकी दुकानदारी में शामिल हो चुका है। दुनियां को धोका देने का पूरा पूरा इन्तज़ाम कर चुका है। लेकिन निज मन फटकार भेजता रहता है। खामोश नहीं होने पाता।

नींद हराम कर रखी है। घर में माता-पिता मौजूद हैं वे बूढ़े हैं, लाचार हैं, बीमार हैं। इनकी सेवा होनी चाहिए इनकी खिदमत होनी चाहिए। वे सहारा चाहते हैं, वे पूजा के योग्य हैं। उन्होंने आपको जन्म दिया, पाला पोसा लेकिन आप उनकी सुध नहीं लेते। उनका हाल तक नहीं पूछते उनकी

सेवा से कतराते हो। कभी उदारता से उनसे पेश नहीं आये, कभी उनकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया लेकिन आप चले हैं वैष्णो देवी के दर्शनों के लिए, तीर्थयात्रा के लिए, मथुरा और आयोध्या के लिए, हरिद्वार स्नान के लिए, दुनियां को दिखावे के लिए आप बड़े ईश्वर भक्त हैं ताकि लोग आपका मान करें बहुत खूब। खैर आप संसार को धोका देने में सफल हो गये हो। लेकिन निज मन को क्या करोगे ? वह फटकार देता ही रहेगा वरना कहा गया है।

जिस घर बूढ़े मां बाप, उसको तीर्थ करना नहीं चाहिए।
जिस घर कन्या कुंवारी, उसको यज्ञ करना नहीं चाहिए।

इसका मतलब है कि घर में बूढ़े माता पिता मौजूद हों तो कोई तीर्थ करने की आवश्यकता नहीं है। बूढ़े माता पिता की सेवा का फल जो प्राणी को मिलता है वह तीर्थ यात्रा से बहुत अधिक है क्योंकि यह इन्सान का प्रथम कर्तव्य है। पहला शुभ धर्म है कि माता पिता की सेवा करे और जिस घर कंवारी लड़की हो वहां तो हर रोज़ यज्ञ होता है। कंवारी लड़की का पालन पोषण, उसकी देख भाल

और उसकी शिक्षा का प्रबन्ध और उससे सच्चा और सुचा प्रेम कुल स्त्री जाति की पूजा मानी गई है। वह सब कंवारी लड़कियों को अपनी ही बेटियां समझेगा। इससे बढ़कर कोई यज्ञ नहीं है।

सुना है कि एक प्रदेश के अमीर आदमी वर के लिए एक लड़के की तलाश में बम्बई या कलकत्ता या अन्य किसी बड़े शहर में जाते हैं तो लड़के से सवाल करते हैं कि आप क्या कार्य करते हो ? जवाब, मैंने अभी २ अपनी दुकान का दीवाला निकाला है बेकार हूं। सवाल, कितनी रकम का दीवाला निकाला है ? जबाब, १० लाख रुपये का दीवाला निकाला है और ६५% अदायगी का फैसला सबसे कर लिया गया था। सवाल, इससे पहले क्या कार्य करते थे ? जवाब, पहले एक कपड़े की दुकान करता था। इससे नुकसान हो गया। लोगों का पांच लाख रुपया अदा करना था। सब व्यापारियों से गुप्त बात चीत करके ५०% फैसला कर लिया है और दीवाला निकाल दिया। सबका हिसाब अदा कर दिया।

अमीर आदमी यूं ह हिसाब लगा लेता है कि इस लड़के के पास छः लाख रुपया है और वह सगाई

कर देता है। जिस लड़के ने जितने ज़्यादा दीवाले और ज़्यादा धन राशी के निकाले हैं उसका विवाह अच्छे घराने में हो जाना सम्भव हो जाता है। यह लूट है। लूट पड़ी है लूटो लूट, लूट का बाज़ार गर्म है। चारों ओर लूट दिखाई देती है। सब जगह लूट का दृश्य है। सबसे बड़ा मज़ा यह है कि ऐसे लुटेरों का मान सब जगह हो रहा है और मिलता है मान, मिलता है आदर। समाज में इनकी जगह हमेशा आगे २ होती है। लेकिन इनका मन साक्षी है कि इससे किस तरह धन इक्ट्ठा किया है। अपने मन की आवाज़ को दबा नहीं सकता है।

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं १ होशियारपुर

१८ मई १९७७

प्यारे भाई ! राधास्वामी

आप शंकर जी का ही ध्यान करो, शिव ज्ञान का रूप हैं।

सतगुरु धारण करने का अर्थ यह नहीं है कि तुम सत्गुरु का ही ध्यान करो। सतगुरु देह का नाम नहीं है सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, समझ का, सच्चे विवेक का। जो लोग सिर्फ गुरु का या सिर्फ शिवजी का ही ध्यान करते हैं वे समझ विवेक ज्ञान को नहीं समझते या नहीं समझना चाहते। उनको आत्मिक या परमार्थिक लाभ नहीं मिल सकता। हां किसी का भी ध्यान करने वाले को सांसारिक पदार्थ और खुशी मिल सकती है।

ध्यान की शक्ति का क्या लाभ है ? (१) ध्यान करने वाले की इच्छा शक्ति बढ़ जाती है व सांसारिक वासनाएं बहुत हद तक पूरी हो सकती हैं। (२) चित्त की वृत्ति ध्यान योग से एकाग्र होने से उसमें विवेक उत्पन्न होता है। और वो किसी बात के गूढ़ रहस्य को समझने के योग्य हो जाता है।

जिस नाम का हम जाप करते हैं, अगर नाम के असली भाव का पता नहीं है तो ऐसे आदमी की भी आत्मिक उन्नती नहीं हो सकती। इस वास्ते सतगुरु के धारण करने का मतलब यह है कि किसी ब्रह्म-निष्ठ या आत्मनिष्ठ के पास बैठकर उसके बचनों को सुनना व गुनना और उसके कहे बचनों पर यह विश्वास हो जावे कि निश्चय ही उसकी कही वाणी सत्य है। उस पर अमल करना चाहिए। यही गुरु धारण करना है।

आदमी के अन्तर तीन चीज़ें है। एक उसका देह व उसका भान बोध। दूसरा मन व मन की आशाएं, तीसरा आत्मा व प्रकाशमय अपने अंतर में अपने आपको देखना, इसी का नाम सतचित्त और आनन्द है। इन तीनों किस्म के शरीरों और बोध

भानों का जो चीज़ हमारे अंतर में अनुभव करती है या साक्षी है वो असल में हम हैं। इन तीनों शरीरों में व इनकी अवस्थाओं में परिवर्तन होता रहता है और समय पर नाश भी हो जाते हैं। मगर जो वह चौथी चीज़ है, सब की साक्षी, वो नाश नहीं होती। जब तक मानव उस अपने रूप का अनुभव नहीं करेगा और उसे यह विश्वास नहीं होता कि यह सत्तचित आनन्द परिवर्तनशील हैं और नाशवान हैं उसको पूर्ण शान्ति नहीं मिल सकती।

गुरु इसलिये धारण किया जाता है कि आदमी को अपने रूप का ज्ञान हो जावे और वो विचार करके कि तीनों शरीरों में परिवर्तन होता रहता है और वो इस परिवर्तन में दुःख व सुख न मनावे, इसका नाम है जीवन्मुक्त अवस्था। मेरे होशियारपुर में होने का कार्य क्रम पता करके कभी भी आकर मिल सकते हो।

आपका,
फकीर

Manavta Mandir
Hoshiarpur
24.8,76

Dear J. I. Gianchandani, R. S,

Time, Tide & life are always running. They never stop. Those who try to live happy & peaceful, they pass their lives in better condition & those who worry & take wrong suggessions, they suffer.

Pass your life in happy mood. So far I am concerned, I heartily wish you & your family members a healthy, wealthy & peaceful life. I struggled hard to know what I was before coming in the womb of my mother & what will be with me & where shall I go after leaving this physical frame. I have not been able to solve this problem practically. Theories are different. So I heartily wish that nature may give me strength to express myself after leaving this physical frame as to what happened with me. On occasions, I feel who am I ? A bubble of supreme consciousness. It is created in the course of evolution of the nature & will merge back in the ocean of Infinity.

Well Gianchandani ! We meet here under the law of radiation in this world & I heartily wish you health, wealth & peace.

Yours Sincerely,
(Sd) F A Q I R.

पत्र नं० ३

नकल चिट्ठी ता० 25 मई 1977 हजूर परम दयाल जी महाराज की ओर से श्री राम रूप सूफी ग्राम महम जिला रोहतक के नाम

सूफी साहिब,

राधास्वामी-आप का पत्र मिला। मौज या कर्म मुझे संतमत में ले आये। सन्तों ने कहा है कि सूफी और वेदान्ति दोनों ही कालमत में हैं। कालमत है मन का मत, अर्थात जितना भी जीवन का खेल जो कि मन से होता है, वो काल मत है। आप की कवितायें और बातें, मेरा सारा काम, किताबें लिखना और सत्संग कराना, यह सब कालमत में है। कालमत को समझ कर उस में न फंसना ही संतमत है। किसी गुरु के जाल में फंस जाना, उसके प्रेम में मस्त हो जाना या ईश्वर परमेश्वर की भक्ति में मन से मस्त हो जाना, काल और मायामत है क्योंकि जब तक कोई आदमी किसी ग़ैर की इबादित करता है, ईश्वर परमेश्वर और गुरु को ग़ैर

समझ के पूजता है, वो काल और मायामत में है। तुम्हारी कविताओं को पढ़कर मैं जानता हूं कि तुम काल और माया में हो। केवल तुमको हक़ीकत का राज़ बताने के लिये चन्डीगढ़ बुलाया है, ताकि तुमको असलियत बता सकूं। जब तक जीवन है चाहे कोई भी हो इस काल और माया देश में, 'मैं और तू' के बिना गुजारा नहीं। 'मैं और तू' रहें मगर इन में फंसो नहीं।

आपका
फकीर !

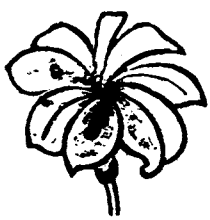

पत्र नः ३

नकल चिट्ठी ताः 18 जून 1977 ई० जो हजूर परमदयाल जी महाराज द्वारा श्री राम स्वरूप सूफी, ग्राम महम, ज़िला रोहतक को लिखी गई।

सूफी साहिब,

राधास्वामी !

आप के पत्र के उत्तर में हजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द लिखता हूं :-

ममता जाती नहीं मेरे मन से 'टेक'
मेरा कोई न मैं हूं किसी का, मुझ में कुछ नहीं मेरा।
समझ बूझ ऐसी काम न आई, करता हूं मेरा तेरा॥
मिटे न यह लाख यत्न से '१'
साथ न लाया अपने कुछ भी, साथ नहीं कुछ जावे।
बीच की दशा में साथ हुआ है, समझ में बात यह आवे॥
मनन श्रवण से कथन से '२'
मेरे तेरे पने का बन्धन, मिथ्या बन्ध बन्धाया॥
यह बन्धन नहीं काटे कटता, कितना उपाय कराया॥
योग युक्ति साधन से '३'

क्या ले आया क्या ले जायेगा, यह जाने सब कोई ।
जान जान अनजान बना है, अचरज अचरज होई ॥
छुटा नहीं कोई यह बन्धन से '४'
तन मन धन साधन में ममता, योग ज्ञान में ममता ।
राधास्वामी अब तो दया करो तुम, चित में आवे समता ॥
जाये ममता जीवन से '५'

तुम्हारा साधन अभ्यास ठीक है । यह अन्तर के जितने दर्जे हैं यह या तो प्रत्येक व्यक्ति की जैसी २ प्रकृति है उसके अनुसार या वाह्य संस्कारों के कारण जीव को साधन के समय नज़र आते हैं । क्योंकि शरीर की प्रकृति तबदील होती रहती है इसलिए साधन भी सदैव एक जैसा नहीं रहता । इस साधन के तजरबे के बाद फिर एक दशा आती है और वह कब आती है ? हजूर दाता दयाल जी महाराज का एक शब्द सुनो :-

मन के मन में अपने मन को जब लगाओगे कभी ।
आयेगी उसकी समझ और ज्ञान पाओगे तभी ॥

आप मन के मन में तो हैं मगर मन के मन में आपने अभी अपने मन को नहीं जोड़ा । मन के मन में मन को जोड़ने का क्या भाव है ? अपने अनुभव के आधार पर कहता हुं । जो कुछ मेरे या तुम्हारे अन्तर प्रकट होता है उसको तुम देखते हो

जो कुछ तुम अपने अन्तर देखते हो यह तुम्हारे मन का मन है। जब तक उसमें लय होकर उस चीज़ को नहीं देखोगे जो इन सब चीजों को देखती है तब तक ज्ञान, अनुभव और शान्ति नहीं मिलेगी। मैं भी तेरी तरह किसी चीज़ को ढूंडता था और दाता दयाल जी महाराज को तंग किया करता था। उन्होंने मुझे यह काम दिया था और फरमाया था कि तेरा उद्धार सत्संगी करेंगे। जब सत्संगियों ने कहा कि मेरा नूरानी रूप उनके अन्तर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो मैं अपने अन्तर जो प्रकाश और शब्द को देखता हूं तो उसमें उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। जब कभी उसकी तलाश करता हूं तो तलाश करने वाले की हस्ती खत्म हो जाती है अर्थात जुज़ कुल में मिल जाता है। बाकी क्या रह जाता है ? कुछ रहता है ज़रूर, मगर वह वर्णन नहीं हो सकता। देखा नहीं जाता, समझा नहीं जाता, कोई उसे हैरत रूप कह देता है, कोई उसे विस्माधि या उनमुन कह देता है। क्या समझा ? कि मैं कौन हूं। हस्ती के हिलोर में मेरे अन्तर एक चेतनता पदा हुई

उस चेतनता में 'मैं' आ जाती है, अंहकार आ जाता है। अब संसार में रहता हूं मगर इस ज्ञान से 'मेरे तेरे पने' का बन्धन अभी बिल्कुल तो नहीं छूटा मगर कम हो रहा है। तुम सूफी हो। सन्तों के मार्ग में वेदान्ति और सूफी को कालमत में कहा गया है। चले चलो! जब तक तुम फकीर चन्द या गुरु या चेले के भाव को त्यागोगे नहीं, इस अवस्था में नहीं आ सकते। मगर यह कठिन काम है। जिन व्यक्तियों के शारीरिक स्वस्थ्य में गड़वड़ है, ब्रह्मचर्य गिरा हुआ होता है या संसार की आशायें होती हैं उनको देर लगती है : इसका इलाज है सत्संग और वह तुम करते नहीं। चार दिन के लिए चण्डीगढ़ आये और एक लम्बा चौड़ा पत्र लिख दिया।

फकीर

स्वर्गीय डा० विद्यासागर सुपुत्र स्वर्गीय पं: वलीराम वैद्य फिरोज़पुर की आत्मा के कल्यार्थ शुभ भावन

मेरे परम मित्र गुरु भाई स्वर्गीय पं० वलीराम का लड़का विद्यासागर जो कनेडा में डाक्टर रहा, स्वर्गवास हो गया, आज उस की क्रिया है। यह मुझ को बहुत प्यार करता था और उस का मुझ पर विश्वास था। और इसी विश्वास के सहारे कनेडा से मुझे मिलने आया मगर मौज को मंज़ूर न था। यहां पहुंचने से पहले लुध्याना हस्पताल में चोला छोड़ गया। उस के लड़के का खत आया कि वो आखरी तीन दिन आप को ही याद करता रहा। मैं सोचता हूं कि क्या तू कुछ उसकी आत्मा के लिये कर सकता है ? यह स्वाल है, मेरे अपने आत्मा के अन्तर। संतों में आम रिवाज यह है कि जीव को सत्गुरु सत्लोक ले

जाता है। यह मानता हूं कि सत्गुरु ले जाता है यदि किसी को यह पता हो कि सत्गुरु क्या, कौन और कैसा है ? सत्गुरु नाम है सच्चे अनुभव और ज्ञान का, अगर किसी को इस जीवन मैं यह प्राप्त हो जाय तो फिर वो इस संसार के चक्र में नहीं आयेगा, बल्कि मैं तो यह कहूंगा कि उस का अंश पूर्ण में मिल जाता है। जब अंश पूर्ण में मिलता है तो पूर्ण में न शब्द है, न प्रकाश है, न ब्रह्म है न बाबा है। इसलिये मैं इस ख्याल से कि चूंकि मेरे साथ प्रेम करता था शायद उसकी आत्मा यहां कहीं हो तो उसे कहना चाहता हूं विद्यासागर ! दुनियां देखी तू ने, बाहर चला गया, लाखों रुपया कमाया, जीवन क्या है ? तुम्हारे बाप को, मां को, मैं यही समझाया करता था, अगर तू यहां कहीं है, तो तू शब्द, प्रकाश जो तेरा रूप है, उस में चला जा।

संसार वालो ! मरने वाले को सदा हर पंथ वाले ख्याल देते हैं और मेरी बुद्धि भी मानती है, इसलिये मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि अगर उसकी आत्मा कहीं भटक रही हो तो वो इस बन्धन को तोड़ कर अपने घर जाये या दूसरा जन्म ले।

ऐ मेरी हस्तों के बनाने वाले ! जीवन किसी धुन में गुज़रा, बहुत कुछ समझा, मगर अब ऐसा मालूम होता है कि मैंने कुछ नहीं समझा। जब तक हैपना मौजूद है, सिवाय अपने आप को, ए मेरे मालिक ! परम तत्व आधार !! तेरे शरणागत करने के और मेरे पास कुछ नहीं। दोस्तो ! ख्वाहश ज़रूर है कि अगर शरीर के खतम होने पर, कुछ मेरा बाकी रह गया और कहीं गया तो बता जाऊं कि किस तरीका से और मेरा क्या अंजाम हुआ। अभी तक मेरी समझ में जो कुछ भी है वो सब थ्यूरी (*Theory*) है. ग़लत भी हो सकता है और ठीक भी, इतना तो मुझे विश्वास हो गया कि यह सारा खेल मनके चक्र का है। न कोई बाहर का गुरु मदद करता है और न कोई और मदद करता है, इस ज़िन्दगी में भी और ज़िन्दगी के बाद भी और यह समझ बाहर का गुरु देता है। मेरे ज़िम्मे हुक्म था तालीम को बदल जाने का।

जो कुछ मैंने समझा, सोचा, अनुभव किया, वो कहता रहता हूं, यह महात्मा जो दुनियां में दावा

करते हैं कि हम तुम को अन्त समय ले जायेंगे। यह सच्चाई ब्यान करें, अगर सचमुच इनको भी पता नहीं होता जैसे मुझे पता नहीं होता, तो यह सारे के सारे पथ भ्रष्ट हैं और हम भोले भाले जीवों को मूर्ख बना कर उन्होंने लूटा है। अच्छा सागरिया ! अगर तू कहीं है तो अपने घर पहुंच जा।

फकीर !

करबद्ध प्रार्थना

अपने कर्म के चक्कर में आकर कि मैं अपना अनुभव कह जाऊंगा और हजूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रत लाल जी महाराज की आज्ञानुसार कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना और हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञा कि निर्भय होकर काम कर जाओ, मैं आज ३८ साल से यह काम कर रहा हूं।

हमारी यह संस्था एक रजिस्टर्ड ट्रस्ट के अधीन है, कानून के अनुसार हम को जितना रुपया साल का आता है वो उसी साल में कम से कम ७५ प्रतिशत खर्च कर देना चाहिये। इसलिये मैंने फ्री प्रकाशन, होम्योपैथिक, एलोपैथिक, आंखों और दान्तों के हस्पताल जारी किये। पिछले वर्ष हस्पतालों में ५५५३२ रुपये दो पैसे खर्च आया और फ्री प्रकाशन में ३३३३२ रुपये ९३ पैसे खर्च आया।

मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने वालों की संख्या

२६०० हो गई है और लगातार बढ़ रही है मेरी आयु ९१ बर्ष की हो गई है। मुझ से अब अधिक सफर नहीं होता, इसलिये हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि जिन सज्जनों की मानव मन्दिर पत्रिका पढ़ने में रुची न हो वे इसे न मंगावें और जो मंगवाते हैं अगर उनकी आत्मा गवाही देती है कि उनको इस पत्रिता से कुछ लाभ होता है तो वे कृपा करके मन्दिर की यथा शक्ति सहायता करें।

रह गया हस्पताल, जब तक चलेगा चलाऊंगा नहीं तो बन्द कर दूंगा।

मैंने यह काम अपनी नीयत से बड़ी सच्चाई और निष्काम भाव से किया है। मैं यह जानता हूं कि दुनियां रोचक और भयानक बातों की तरफ ज्यादा झुकती है, फिर भी सच्चे मन से अपने कर्तव्य या कर्म को भोग कर इस संसार से जाना चाहता हूं।

हमारी संस्था में जनता के धन का उचित उपयोग होता है मैं मानव मन्दिर मासिक पत्रिका का मूल्य रख देता किन्तु मैं ब्राह्मण होने के नाते अपने अनुभव को जो सारे जीवन के संघर्ष से प्राप्त किया है इसे बेचना नहीं चाहता। दान के रूप में जो इच्छा हो भेज सकते हैं।

फकीर।

Regd. No. 26265/74
MANAV MANDIR

NW—HSP—7.

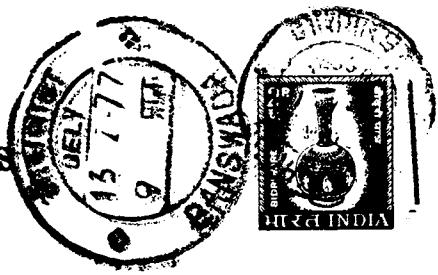

ADDRESS

To

416
Sh. Krishan Lal Ji
President R. Soami
Satsang Bhawan
Banswada.
Distt. NIZAMABAD
(A.P.)

From :

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.

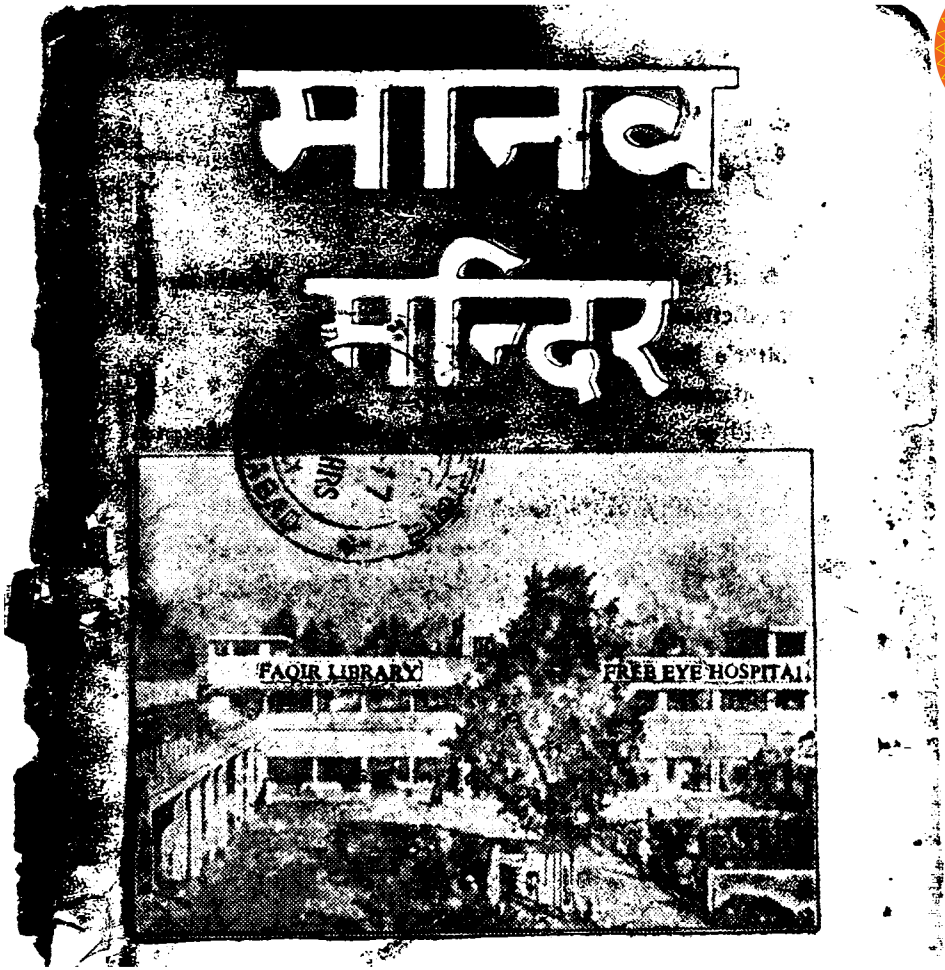

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मानव मंदिर